गलातियों 3

मसीह के सुसमाचार का पौलुस का प्रयोगात्मक और वचन के अनुसार बचाव

(भाग 1)

अध्याय 3 और 4 में पौलुस ने मूसा की व्यवस्था की भक्ति के ऊपर मसीह में विश्वास की श्रेष्ठता को साबित करने के लिए सात तर्कों का इस्तेमाल किया:

तर्क एक: गलातिया के मसीहियों को पवित्र आत्मा यीशु में विश्वास करने से मिला था, न कि व्यवस्था की आज्ञा मानने से (3:1-5)।

तर्क दो: अब्राहम को उसके विश्वास से धर्मी ठहराया गया था, न कि व्यवस्था को मानने से (3:6-9)।

तर्क तीन: यहूदी लोग पूरी तरह से व्यवस्था की आज्ञा को नहीं मान पाए थे, इस कारण इससे उन्हें श्राप मिला (3:10-14, 19-22)।

तर्क चार: अब्राहम को परमेश्वर की प्रतिज्ञा व्यवस्था के दिए जाने से सैकड़ों वर्ष पहले दी गई थी (3:15-18)।

तर्क पांच: व्यवस्था का काम मसीह तक पहुंचाने के लिए शिक्षक (या सरपरस्त) बनने का था और वह उद्देश्य पूरा हो चुका था (3:23—4:7)।

तर्क छह: पौलुस ने अपने भाइयों से व्यवस्था की ओर न लौटने का व्यक्तिगत आग्रह किया। मसीह की आशिषें प्राप्त करने के बाद व्यवस्था की ओर वापस जाने का अर्थ अपने आनन्द और आशा को खो देना था (4:8-20)।

तर्क सात: पौलुस ने हाजिरा और सारा का रूपक दिया जो दो वाचाओं को दर्शाती है। मसीह में स्वतन्त्रता (जिसका प्रतिनिधित्व सारा करती थी) व्यवस्था की दासता (जिसका प्रतिनिधित्व सारा की दासी हाजिरा करती थी) से कहीं उत्तम है (4:21-31)। मसीही लोग पुरानी वाचा की नहीं बल्कि नई वाचा की संतान हैं।

अध्याय 1 और 2 में पौलुस ने अपनी प्रेरिताई और उस सुसमाचार के बचाव में जो कुछ उसने सुनाया था, अपने व्यक्तिगत अनुभव का ध्यान दिलाया। 3:1-5 में उसने गलातियों के अपने आत्मिक अनुभव से तर्कदिया कि मसीही लोगों का उद्धार अनुग्रह से हुआ है न कि व्यवस्था के कामों से। "वह अनुभव व्यवस्था के दायरे में नहीं बल्कि विश्वास के दायरे में था।"[1] प्रेरित ने दिखाया कि उनका वर्तमान व्यवहार (यहूदी मत की शिक्षा देने वालों से प्रभावित) मसीह में उनके अपने मनपरिवर्तन से उलट था। उसने उन्हें वह समय याद करने को कहा जब उन्होंने

सुसमाचार को सुनकर इसे माना था। उसने उन्हें यहूदी मत के शिक्षा देने वालों के गलातिया की कलीसियाओं में आने वालों से पहले की मसीह में अपने नये जीवनों को याद करने को भी कहा।

विश्वास के द्वारा प्राप्त हुआ पवित्र आत्मा (3:1-5)

[1]हे निर्बुद्धि गलातियो, किसने तुम्हें मोह लिया है ? तुम्हारी तो मानो आंखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया! [2]मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूं कि तुम ने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के समाचार से पाया ? [3]क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे ? [4]क्या तुम ने इतना दुख व्यर्थ ही उठाया ? परन्तु कदाचित व्यर्थ नहीं। [5]जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ्य के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या सुसमाचार पर विश्वास से ऐसा करता है ?

आयत 1. पौलुस ने चिल्लाते हुए कहा, **हे निर्बुद्धि गलातियो**। नये नियम में "हे" के लिए अंग्रेज़ी संस्करणों "ओ" शब्द नहीं मिलता, जिससे यूनानी भाषा में इस अध्याय का आरम्भ होता है। "ओ" समुच्य बोधक Ω को दर्शाता है जो कि यूनानी वर्णमाला का अंतिम अक्षर ओमेगा है। एक शब्द के रूप में यूनानी अक्षर वैसे ही भाव को दर्शाता है जैसे हिंदी या अंग्रजी में आम तौर पर "(किसी वाक्यांश के आरम्भ में) भावना को व्यक्त करने" के लिए और चिल्लाकर पुकारने के लिए इस्तेमाल होता है।[2] जैसा कि आम तौर पर माना जाता है कि गलातियों के नाम पौलुस का पत्र बड़े भावुक होकर लिखा गया था। भावना से भरे इस समुच्य बोधक को यहां से निकालने का कोई कारण नहीं है, जैसा कि NASB, NIV, NRSV तथा अन्य कई संस्करणों में किया गया है।

गुडस्पीड के अनुवाद "तुम बुद्धिहीन गलातियो!" में भी चाहे मूल वचन भी "ओ" नहीं है, यहां पर काफ़ी रंगीला पर गलत बिल्कुल नहीं। शायद सबसे हद तो फिलिप्स के अनुवाद में मिलती है, "ओ तुम गलातिया के प्रिय मूर्खो।" यह वाक्य रचना चाहे शाबाश देने वाली तो नहीं पर इसमें वह प्यार और लगाव झलकता है जो पौलुस का अपने प्रियों के लिए था पर विश्वास में वे बुरी तरह से गुमराह बच्चे थे। यह किसी भी अन्य अनुवाद की तरह मूल अर्थ से उतना ही निकट है।

"मूर्ख" यूनानी भाषा के शब्द *anoētos* (एनोटियोस) से लिया गया है। "ना समझ" है।[3] यूनानी भाषा के शब्द *nous* ("बुद्धि") से लिया गया यह शब्द "दिमाग" से सम्बन्धित है जो ("*noeteis,*" बौद्धिक) से सम्बन्धित है जो समझ (*noetic*) की ओर संकेत करता है। *Anoētos* (अनोटस) यूनानी भाषा के शब्द *noeō* ("विचार") से भी सम्बन्धित है जिसका अर्थ "समझना," "समझ," या "जानना" है। जहां तक *anoētos* (अनोटोस) शब्द की बात है पहला अक्षर (*a*) एक नकारात्मक कृदंत है जिसका अर्थ "अ," "नहीं," या "बिना" है जिसे यूनानी व्याकरण के जानने वाले "अल्फा नकारात्मक" कहते हैं। अन्य शब्दों में यह जिस शब्द के साथ जुड़ जाता है उससे उसका सामान्य अर्थ छीन लेता है। इस मामले में इस शब्द का अर्थ कुछ इस प्रकार हो जाता है, "बुद्धिहीन," "विचारहीन," या "समझ के बिना।"

निश्चय ही पौलुस का इरादा इन भाइयों पर अपमान फैंकना नहीं था जिन्हें उसने सुसमाचार के द्वारा जन्म दिलाया था (देखें 1 कुरिन्थियों 4:15; फिलेमोन 10)। 4:19 में उसने लिखा, "हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक तुम्हारे लिए मैं जच्चा की सी पीड़ाएं सहता हूं।" इस आयत में मूल यूनानी धर्म शास्त्र में "मेरे छोटे बच्चो" (*tekna mou*) है जिसका सही अनुवाद NIV में "मेरी प्रिय संतान" के रूप में किया गया है। उसकी भाषा एक प्रेमी पिता वाली है जो परेशान है कि ये "बच्चे" सुसमाचार के बुनियादी तोड़ मरोड़ या बिगाड़ से कितने अनजान हैं जिसमें यहूदी मत की शिक्षा देनेवाले उन्हें ले गए थे।

पौलुस ने एक पिता की तरह बात की जो अपने बच्चों की किसी नासमझी का पता चलने पर परेशान होता कि वह उन्हें कैसे समझाए कि वे मूर्खतापूर्ण फंदे में फंस गए हैं। उसने केवल इतना कहा था, "यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता" (2:21)!

अपने पाठकों को "निर्बुद्धि गलातियो" कहने के बाद पौलुस ने पूछा, **किसने तुम्हें मोह लिया है? तुम्हारी तो मानो आंखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया!** पौलुस हैरान था कि क्रूस पर चढ़ाए, जाने और इसके प्रभावों को इतना साफ़ साफ़ समझाने के बाद वे इतनी बुरी तरह से या इतनी जल्दी कैसे भूल सकते हैं। यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना और जी उठना उसके लिए मसीही संदेश का सार था (6:14; 1 कुरिन्थियों 1:22, 23; 2:2; 15:3, 4)। किसी के लिए भी मसीह में छुटकारे की अद्‌भुत स्वतन्त्रता को जानकर फिर से व्यवस्था की दासता में चले जाना तो मूर्खता की इंतहा थी।

यूनानी शब्द (*baskainō*, बस्कायनो) जिसका अनुवाद "मोह लिया" हुआ है, नये नियम में केवल एक बार यही पर इस्तेमाल हुआ है। इसका अर्थ मूल में "नज़र से बुरा प्रभाव डालना" है।[4] नज़र को दिल की खिड़की माना जाता है, जिसके द्वारा भीतरी विचार और इच्छाएं आगे भेजी जा सकती है।[5] कैनथ एल. बोलस ने कहा है कि प्राचीन अंधविश्वासों के अनुसार "कोई व्यक्ति किसी को घूर कर उस पर जादू चला सके या जादू की कला से उसे वश में करके उससे ऐसे-ऐसे काम करवा सके जो उसके स्वभाव से उलट हों।"[6] NLT में कहा गया है, "तुम्हें किसकी बुरी नज़र लग गई?" (देखें CEV; NIRV)। इस भाषा का अर्थ यह नहीं है कि पौलुस ऐसे मूर्तिपूजक अंधविश्वासों की शक्ति में विश्वास रखता था। इसके बजाय वह अपने पाठकों को शर्मिंदा करने के लिए लाक्षणिक रूप से बात कर रहा था। यह भाषा यूनानी-रोमी जगत की साहित्य-शास्त्र भाषा का हिस्सा थी।[7]

"दिखाया गया" (*prographō*, प्रोग्रैफो) प्रेरित पौलुस के स्पष्टवादी प्रचार की ओर ध्यान दिलाता है। जिसने आरम्भ में गलातियों को मसीह की मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने का प्रचार किया। यूनानी शब्द किसी बोर्ड या इश्तिहार पर सार्वजनिक नोटिस का सुझाव देता है।

आयत 2. पौलुस ने पूछा, **मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूं कि तुम ने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के समाचार से पाया?** पहले किसी को लग सकता है कि पौलुस यहां पर आत्मा के वास के आरम्भ की बात कर रहा है जो कि बपतिस्मा के समय हर विश्वासी को मिलता है (प्रेरितों 2:38; देखें रोमियों 8:15-17)। परन्तु गलातियों 3:2 से 3:5 की निकटता यह अर्थ देने के लिए लगती है कि पौलुस मुख्यतया किसी बड़े ही स्पष्ट आत्मा के चमत्कारी दानों की बात कर रहा था (1 कुरिन्थियों 12:4-11, 27-31), यानी

ऐसी चीज़ जो उसके तर्क को साबित करती है।[8] पतरस ने इस तथ्य के आधार पर कि परमेश्वर ने अन्यजातियों को चमत्कारी शक्तियां वैसे ही दी थीं जैसे उसने पिंतेकुस्त के दिन प्रेरितों को दी थीं, अन्यजाति परिवर्तितों के स्वीकार किए जाने का समर्थन किया (प्रेरितों 11:16, 17)। इसके अलावा इफिसुस में बारह चेलों को जिन्हें अन्यभाषाओं में बोलने की योग्यता दी गई थी, इस तथ्य की गवाही था कि उन में परमेश्वर का आत्मा था (प्रेरितों 19:1-7)।

गलातिया के मसीहियों को आत्मा के वास का दान तब मिला था जब उन्होंने सुसमाचार को सुनकर उस पर विश्वास किया और मसीह में बपतिस्मा लेकर आज्ञा मानी थी (3:26, 27)। उन्होंने संदेश को सुना था और इसे आज्ञाकारी विश्वास के साथ माना था (देखें रोमियों 10:17)। यह तो बाद में हुआ कि उनके ऊपर व्यवस्था को थोपने का प्रयास करने के लिए यहूदी मत की शिक्षा देने वाले आ गए। परन्तु पौलुस चाहता था कि वे समझ लें कि उन्हें यह आत्मा व्यवस्था के कामों से नहीं मिला था।[9]

आयत 3. आयत 1 की भावनाओं को दोहराते हुए पौलुस ने अपने पाठकों से पूछा, **क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो?** आज के समय में ऐसा प्रश्न कुछ लोगों को ठोकर दिलाने वाला लग सकता है, पर पौलुस की इच्छा अपने पाठकों को उनकी भयानक गलती से अवगत कराने की थी। सुसमाचार में उनका पिता होने के कारण, वह आत्मिक बच्चों की भलाई चाह रहा था। अच्छे माता पिता कई बार अपने बच्चों को कोई ऐसी गलती करने से जिसके दूरगामी परिणाम हो सकते हैं रोकने के लिए उन से बात करते हुए कठोर भाषा का इस्तेमाल करते हुए लगते हैं।

पौलुस ने पूछा **कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे?** "आत्मा की रीति पर आरम्भ" मसीही जीवन के आरम्भ को कहा गया है जो बपतिस्मे के समय होता है। परमेश्वर के अनुसार से गलातियों ने मसीह में नया जीवन आरम्भ किया था था (रोमियों 6:4)। पवित्र आत्मा के वास से उन पर मोहर किया गया था (इफिसियों 1:13) और कलीसिया को बनाने के लिए आत्मा के दानों के साथ अधिकृत किया था। परमेश्वर उनमें और उनके द्वारा कार्य कर रहा था।

गलातियों को आत्मा मिला हुआ था इसलिए उनके लिए यह सोचना मूर्खता की बात थी कि वे "शरीर की रीति से अंत" कर सकते हैं। ईश्वरीय ("आत्मा") और मानवीय *sarx* ("शरीर") के बीच बड़ा फर्क है। यूनानी शब्द (*sarx,* सैरक्स) अनुवादित शब्द "शरीर" है के अर्थ के कई भेद हैं जिनका सम्बन्ध शारीरिक देह से है।[10] इस संदर्भ में NLT में इस शब्द का अनुवाद "मानवीय प्रयास" के रूप में किया गया है। इस शब्द का सम्बन्ध व्यवस्था की आज्ञा मानने से है (देखें 3:5)।

"अंत" शब्द क्रिया शब्द *epiteleō* (एपिटेलियो) से मेल खाता था जिसका अर्थ "पूरा होना," "खत्म होना," या "परिपक्व होना।" यहूदी मत की शिक्षा लेने वाले व्यवस्था के प्रति निष्ठा को परिपक्व मसीही बनने के लिए आवश्यक बता रहे थे। 3:23-29 में पौलुस ने दिखाया कि व्यवस्था यहूदियों को मसीह में विश्वास तक ले आई थी न कि मसीह यहूदियों को व्यवस्था की ओर ले जाता है। व्यवस्था इस्राएलियों को (निर्गमन 19:3-6) यीशु मसीह के आने और क्रूस पर उसकी मृत्यु तक के लिए दी गई थी। यह यहूदियों को दी गई थी, न कि अन्यजातियों को व्यवस्था को मानने वाले अन्यजाति ही पीछे की ओर जा रहे थे न कि आगे की ओर।

आयत 4. पौलुस यह नहीं समझ पाया कि गलातियों ने विशुद्ध सुसमाचार से फिरकर **इतना दुख व्यर्थ ही उठाया** क्यों (देखें 1:6-9)। वचन में उन परीक्षाओं की बात नहीं बताई गई जो अभी तक इन मसीही लोगों ने सही थीं। तो भी पौलुस और बरनबास ने पहली मिशनरी यात्रा के दौरान दुख सहा था (प्रेरितों 13; 14)। उन्होंने झूठे नबियों और अविश्वासियों का ज़ुबानी विरोध सहा था। उन्हें नगरों में से निकाल दिया गया था और पौलुस पर तो पथराव भी हुआ था। इन मिशनरियों के साथ इतने अपमानपूर्वक ढंग से व्यवहार किया गया था, कि जिन नई कलीसियाओं को वे छोड़कर आए थे उन्होंने भी उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया गया होगा (प्रेरितों 14:2)। अविश्वासी यहूदियों ने अन्यजातियों के साथ साथ जो बिना यहूदी बने (खतना किए) परमेश्वर की ओर लौट आए थे, मसीह में भरोसा करने वाले यहूदियों का भी विरोध किया हो सकता है।

परन्तु कदाचित व्यर्थ नहीं का स्पष्टीकारण इस बात को दिखाता है कि पौलुस को उम्मीद थी कि गलातिया के लोग मसीह के असली सुसमाचार की ओर लौट आएंगे। तो यदि वे विश्वास के नियम की ओर लौट आते। उनका दुख सहना व्यर्थ में नहीं जाना था।[11]

आयत 5. 3:3 के संदेश को दोहराते हुए पौलुस ने पूछा, **जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ्य के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या सुसमाचार पर विश्वास से ऐसा करता है ?** वह यह कह रहा था कि परमेश्वर ने गलातिया के मसीही लोगों को मसीह में उनके विश्वास के कारण आत्मा दिया और उनके द्वारा आश्चर्यकर्म किए थे।

दो यूनानी शब्द यहां परमेश्वर की गतिविधि पर ज़ोर देते हैं। पहला *epichorēgeō* (एपिकोरेजियो) है जिसका अनुवाद "दान करता" या "देता" हो सकता है। यह और इससे सम्बन्धित शब्द नये नियम में कई बार मिलते हैं,[12] और अधिकतर बार उनमें परमेश्वर के परोपकार पर ज़ोर दिया गया होता है। मूल शब्द *chorēgeō* (कोरेजियो) का इस्तेमाल क्लासिकल यूनानी में किसी धनवान व्यक्ति के लिए "कोरस के प्रशिक्षण के लिए खर्चा देने" के लिए किया जाता था।[13] यहां पर इसका इस्तेमाल परमेश्वर को उदार दान करने वाले के रूप में की गई है जो अपने आत्मा को मुफ्त में दे देता है।

दूसरा यूनानी शब्द *energeō* (एनर्जियो) है जिसका अर्थ है "काम" या "सक्रिय होना।" इससे सम्बन्धित संज्ञा *energeia* (एनर्जिया) ऊर्जा के लिए अंग्रेज़ी शब्द "energy" का आधार है। आरम्भिक मसीहियों द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म परमेश्वर की सामर्थ और ऊर्जा का परिणाम थे।

पौलुस ने उन आश्चर्यकर्मों (जो कि स्पष्ट थे) की ओर गलातियों की आत्मिक अपरिवक्ता के कारण ध्यान दिलाया होगा। "आत्मा का फल" जहां "शरीर के कामों" के उलट उनमें साफ़-साफ़ दिखाई दिया जाना चाहिए था (5:16-26; देखें मत्ती 7:15-23), वहीं जिन आश्चर्यकर्मों की बात यहां कही गई है वहीं शारीरिक सोच वाले गलातियों के लिए और स्पष्ट होंगी।

कई हवाले, विशेषकर प्रेरितों के काम में, आत्मा के सामर्थ के बाहरी प्रदर्शन पर जोर देते हुए, 3:5 में पौलुस द्वारा इस्तेमाल की गई भाषा का अक्स दिखाते हैं:

> चमत्कारी चिह्न: यीशु ने कहा, "विश्वास करनेवालों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई[14] भाषा बोलेंगे, ... ; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे

चंगे हो जाएंगे।'' ... और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिह्नों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा (मरकुस 16:17-20)।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा: यीशु ने अपने प्रेरितों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने का वायदा किया: ''क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (प्रेरितों 1:5)।

पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों का अनुभव: ''वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे'' (प्रेरितों 2:4)।[15]

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस द्वारा योएल की भविष्यवाणी को दोहराया जाना: ''परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी: ... कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा,[16] और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, ... और मैं ऊपर आकाश में अद्‌भुत काम और नीचे धरती पर चिह्न, ... दिखाऊंगा'' (प्रेरितों 2:16-19)।

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस का प्रवचन: ''इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो'' (प्रेरितों 2:33; देखें इफिसियों 4:7, 8, 11-13)।

यरूशलेम में प्रेरितों के काम: ''और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्‌भुत काम और चिह्न प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे'' (प्रेरितों 2:43)।

शमौन द्वारा देखे गए फिलिप्पुस के चिह्न: ''तब शमौन ने स्वयं भी विश्वास किया और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा। वह चिह्न और बड़े-बड़े सामर्थ्य के काम होते देखकर चकित होता था'' (प्रेरितों 8:13)।

सामरिया में पतरस और यूहन्ना के कार्य: ''पतरस और यूहन्ना ... उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था; उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया। जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उनके पास रुपये लाकर कहा, 'यह अधिकार मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पाए।' '' (प्रेरितों 8:14-19)।

कुरनेलियुस के घर पतरस का प्रवचन सुनने वालों द्वारा आत्मा पाना: "पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है। क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा, 'क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?' " (प्रेरितों 10:44-47)।

यरूशलेम में पतरस की सफ़ाई: "जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था। तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया; जो उसने कहा था, ... तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे। अत: जब परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, ... तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?" (प्रेरितों 11:15-17)।

अन्य वचन यीशु की सेवकाई और आरम्भिक कलीसिया के जीवन में आश्चर्यकर्मों के चिह्नों की पुष्टि करने वाली भूमिका को बताते हैं।[17] चिह्नों के प्रमाणिकता देने पर ज़ोर देते हुए हमें उनके व्यावहारिक, कलीसिया के सुधार के लिए उपयोगी मूल्य पर ज़ोर देना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 12:7; 14:12, 18, 19, 26)। उस समय जब नया नियम लिखित रूप में नहीं था, परमेश्वर का वचन मण्डलियों में भविष्यवाणी के माध्यम से प्रकट किया जाता था यानी परमेश्वर इल्हाम के द्वारा अपनी इच्छा को प्रकट करता था। इसके अलावा सिखाने वाले उस संदेश का अर्थ बताते और "बुद्धि की बात" (1 कुरिन्थियों 12:8) बताते जिससे कलीसिया के लोगों को उस संदेश की व्यावहारिकता समझ में आ सकती थी। ऐसी चमत्कारी बातें लोगों में उत्तेजना जगाने के लिए नहीं होती थीं बल्कि वे प्रेम में मसीह की देह के बनाने और उसे मज़बूत करने के लिए उपयोगी और उद्देश्यपूर्ण होती थीं (इफिसियों 4:7-16)।

अब्राहम की धार्मिकता विश्वास के द्वारा प्राप्त हुई (3:6-9)

[6]"अब्राहम ने तो परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता गिनी गई।" [7]अत: यह जान लो कि जो विश्वास करनेवाले हैं, वे ही अब्राहम की सन्तान हैं। [8]और पवित्रशास्त्र ने पहले ही से यह जानकर कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास से धर्मी ठहराएगा, पहले ही से अब्राहम को यह सुसमाचार सुना दिया कि "तुझ में सब जातियां आशीष पाएंगी।" [9]इसलिये जो विश्वास करनेवाले हैं, वे विश्वासी अब्राहम के साथ आशीष पाते हैं।

आयत 6. पौलुस ने अभी अभी साबित किया था कि आत्मा मसीह में विश्वास करने से मिला था न कि व्यवस्था के कामों से। वह विश्वास के इस नियम को समझाने के लिए सप्तति (LXX) में से उत्पत्ति 15:6 से बढ़ाते हुए आगे बढ़ा: "**अब्राहम ने तो परमेश्वर पर विश्वास**

किया और यह उसके लिए धार्मिकता गिनी गई'' (देखें रोमियों 4:3)। अपने मूल संदर्भ में यह बात निसंतान अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बाद आती है कि उसकी संतान आकाश के तारों की तरह असंख्य होनी थी (उत्पत्ति 15:4, 5)। यह बात खतने की परमेश्वर की वाचा का आरम्भ करने से दो अध्याय पहले मिलती है।

अब्राहम का इस्तेमाल यहां शायद तीन कारणों से किया गया: (1) वह यहूदी लोगों का पिता था, (2) वह विश्वास का आदर्श था,[18] और (3) वह व्यवस्था दिए जाने से कई सौ साल पहले हुआ (3:17)। एक और कारण यह जोड़ा जा सकता है कि यहूदी मत की शिक्षा देने वाले लोग गलातियों पर खतने को थोपने के लिए अब्राहम का उदाहरण इस्तेमाल कर रहे थे। सो पौलुस ने उनका तर्क उन्हीं के विरुद्ध लगा दिया। एफ. एफ. ब्रूस का विचार था कि हो सकता है कि गलातिया के मसीहियों को ''विरोध करने वालों के द्वारा बताया गया हो कि उनके लिए अब्राहम के असली पुत्र बनने के लिए यह कितना आवश्यक है और इसलिए अब्राहम की तरह ही खतना किया जाना आवश्यक है।''[19]

आयत 6 आगे कहती है, ''यह उसके लिए धार्मिकता गिनी गई।'' धार्मिकता के रूप में ''गिनी गई'' होने के विचार की कानूनी अवधारणा है यानी यह धर्मी और अनुग्रहकारी न्यायी परमेश्वर की घोषणा है। *अब्राहम अपने स्वयं के गुणों के कारण धर्मी नहीं था बल्कि परमेश्वर ने उसे उस में विश्वास (भरोसा) करने के कारण धर्मी माना।* यहूदी लोगों के पूर्वज, अब्राहम की तरह अन्यजाति मसीहियों को भी मूसा की व्यवस्था के प्रति अपनी निष्ठा के बिना और खतना किए बिना, उनके विश्वास के कारण धर्मी ठहराया जा सकता था। धार्मिकता परमेश्वर की ओर से दिया गया एक दान थी,[20] न कि कोई ऐसी चीज जिसे व्यवस्था को पूरा पूरा मानकर उसे कमाया जा सकता हो।

आयत 7. अब्राहम इस्राएली लोगों का शारीरिक और आत्मिक पिता था। नई वाचा के अधीन **जो विश्वास करनेवाले हैं** (*hoi ek pisteōs,* होइ एक पिस्टोस) वे लोग हैं जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, फिर वे चाहे यहूदी हों या अन्यजाति, खतना किए हुए हों या खतनारहित (रोमियों 4:11, 12)। आर. ऐलन कोल का सुझाव है कि यूनानी वाक्यांश ''खतनावालों'' (*tous ek peritomēs,* टाउस एक पेरिटोमस) के उलट जिनसे 2:12 में पतरस डर गया था, ''विश्वास वाले'' होना चाहिए।[21] ''जो विश्वास करने वाले हैं'' वे ही **अब्राहम की संतान** यानी असली आत्मिक संतान हैं। असल में ''जो मसीह के हैं (अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस)'' भी हैं (3:29)।

यहूदी लोग अपने आपको अब्राहम की संतान होने के कारण झूठा भरोसा रखते थे जैसे कि उसकी संतान होने से वे धर्मी बन गए हों (यूहन्ना 8:33, 39, 53)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपश्चातापी सदूकियों और फरीसियों का जिनका यह भ्रमित विश्वास था सामना किया। उसने उन्हें बताया कि यदि परमेश्वर चाहे तो वह पत्थरों से भी अब्राहम के लिए संतान पैदा कर सकता है (मत्ती 3:9)। इसके अलावा पौलुस ने तर्क दिया कि बाहरी खतना व्यक्ति को असली यहूदी नहीं बना देता; बल्कि असली यहूदी तो मन के खतने से बना जाता है।[22] *''शरीर की संतान'' के बजाय ''प्रतिज्ञा की संतान'' को अब्राहम का ''वंश'' माना जाता है (रोमियों 9:8)*। और तो और ''हर एक विश्वास करने वाले के लिए धार्मिकता के निमित मसीह व्यवस्था का अंत है'' (रोमियों

10:4; देखें कुलुस्सियों 2:14)। पौलुस ने अविश्वासी यहूदियों के लिए यह उम्मीद रखी कि एक दिन वे मसीह में विश्वास करेंगे और तब परमेश्वर उन्हें स्वीकार करेगा (रोमियों 11)। नई वाचा में जो मसीह में "नई सृष्टि" हैं, असल में केवल वही लोग "परमेश्वर का इस्राएल" हैं (गलातियों 6:15, 16; NIV)।

आयत 8. पौलुस ने पुराने नियम को दोहराकर यहूदियों और अन्यजातियों के उद्धार की अपनी खुशखबरी का समर्थन लिया। **पवित्र शास्त्र** को **पहले ही से यह जानकर कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास से धर्मी ठहराएगा, पहले ही से अब्राहम को यह सुसमाचार सुना दिया।** यह प्रतिज्ञा **"तुझ में सब जातियां आशीष पाएंगी"** जिसे पौलुस ने उत्पत्ति 12:3 से उद्धृत किया, अब्राहम को दी गई थी (देखें उत्पत्ति 18:17, 18)। अब्राहम के वंश के द्वारा मसीह ने आना था, जिसने मनुष्यजाति के पापों के लिए मरना और सारे संसार के लिए उद्धार की पेशकश करना था।

उत्पत्ति 3:15 में "वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एडी को डसेगा" की व्याख्या आम तौर पर सुसमाचार प्रचार अर्थात बाइबल में मसीह के सुसमाचार की पहली घोषणा के रूप में की जाती है। इस भाषा का सम्बन्ध यीशु के क्रूस पर शैतान को हराने से है। यदि यह सही है तो उत्पत्ति 12:3 सुसमाचार की दूसरी घोषणा है। यदि नहीं तो उत्पत्ति 12:3 पहली घोषणा होगी।

परमेश्वर की "सनातन मंशा" यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा यहूदियों और अन्यजातियों दोनों का एक ही देह (अर्थात कलीसिया) में उद्धार करना था (इफिसियों 3:1-11)। अन्यजातियों को अपनी नई वाचा में शामिल करना पमरेश्वर की योजना में सदा से था। बोल्स ने लिखा है, "यह योजना बाद में दिमाग में आई नहीं या परमेश्वर के आदम, नूह, अब्राहम और मूसा के साथ व्यवहार के बाद नहीं सोची गई।"[23] बाद में मायूसी में लिया गया कदम नहीं था। यानी परमेश्वर की योजना में उत्पत्ति 12:3 से ही आरम्भ में ही सब जातियों को शामिल किया गया था।

आयत 9. 3:7 से दोहराया गया वाक्यांश **जो विश्वास करने वाले हैं** उन मसीही लोगों की बात करता है जो यीशु मसीह में भरोसा रखते हैं। मसीही लोग **अब्राहम के साथ आशीष** पाने वाले हैं क्योंकि उनमें वैसा ही विश्वास पाया जाता है। बेशक यीशु ने लाज़र की कहानी अपनी कलीसिया स्थापित करने से पहले बताई परन्तु उस निर्धन व्यक्ति का अंत इस संदर्भ में उल्लेखनीय है: विश्वास भरा जीवन जीने के बाद उसकी आत्मा को "स्वर्गदूतों ने लेकर अब्राहम की गोद में पहुंचाया" (लूका 16:22)। "अब्राहम के दास" होने के कारण लाज़र स्वर्गलोक में था।

आयत में अब्राहम को **विश्वासी** कहा गया है। रॉबर्ट एल. जॉनसन ने अब्राहम को परमेश्वर की बात को वैसे ही मानने वाले के रूप में दिखाया। उसने लिखा, "वह असली पथप्रदर्शक और विश्वास के सम्बन्ध का मार्गदर्शक था। और विश्वास करने वाले सभी लोग अपने आत्मिक पिता अब्राहम से ले सीधे कतार में खड़े होते हैं।"[24]

यहूदियों के ऊपर व्यवस्था का श्राप (3:10-14)

[10]इसलिये जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब शाप के अधीन

हैं, क्योंकि लिखा है, "जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है।" [11]पर यह बात प्रगट है कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता, क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। [12]पर व्यवस्था का विश्वास से कोई सम्बन्ध नहीं; क्योंकि "जो उनको मानेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।" [13]मसीह ने जो हमारे लिये शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, "जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।" [14]यह इसलिये हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।

आयत 10. 3:6-9 में विश्वास के नियम के आदर्श के रूप में अब्राहम को दिखाने के बाद पौलुस ने कहा, **इसलिये जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब शाप के अधीन हैं**, "विश्वास के कामों" मूसा की व्यवस्था को कहा गया है (देखें 2:16)। मसीह के अपवाद के साथ,[25] कोई भी व्यवस्था को कभी भी पूरी तरह से नहीं मान पाया। इसलिए व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता को ठहराने का प्रयास करना जैसा कि यहूदी मत की शिक्षा देने वाले गलातियों को कह रहे थे, अपने आपको दोषी ठहराना और श्राप के अधीन लाना होगा।

पौलुस ने व्यवस्थाविवरण 27:26 से उद्धृत किया **"जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है।"** यह बात परमेश्वर के लोगों से प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने से पहले गिरिज्जीम पहाड़ और एबाल पहाड़ पर कनान में बताई जाने वाली आशिषों और श्रापों के संदर्भ से ली गई थी। यह व्यवस्थाविवरण 27 में बताया गया अंतिम श्राप है। पौलुस का उद्धरण सप्तति (LXX) में मिलने वाले यूनानी पठन से जैसा ही है। दोनों में यह स्पष्ट करते हुए कि इब्रानी शास्त्र में केवल किस बात को दिखाया गया है "सब" शब्द को शामिल किया गया है ("व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों" वाक्यांश में)। याकूब ने अपने पत्र में ऐसी ही बात कही: "क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा" (याकूब 2:10)। रोमियों में पौलुस ने ज़ोर दिया कि परमेश्वर की महिमा से रहकर सब लोग पाप करते हैं (रोमियों 3:10, 23)। पूरी तरह से आज्ञापालन के द्वारा कोई भी अपने आपको धर्मी नहीं ठहरा सकता! हर किसी को उद्धारकर्त्ता में भरोसा करना आवश्यक है।

आयत 11. फिर पौलुस ने लिखा, **पर यह बात प्रगट है कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता।** कोई भी परमेश्वर का समर्थन कमा नहीं सकता या परमेश्वर को अपना कर्जदार नहीं बना सकता। रोमियों 3:20 में प्रेरित ने यही सच्चाई बयान की: "क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है।"

व्यवस्था को पूरा करके धर्मी ठहरने के बजाय पौलुस ने विश्वास का "प्रगट" नियम बताया: **"धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा।"** यह बात हबक्कूक 2:4 पर आधारित है जिसे रोमियों 1:17 और इब्रानियों 10:38 में बयान किया गया है। मूल संदर्भ में यहूदा देश लगभग 605 और 598 ई.पू. के बीच, ज़ालिम बेबिलोनियों के हाथों परमेश्वर के न्याय का सामना कर रहा

था। परमेश्वर चाहे अपने लोगों को दण्ड दे रहा था पर वह चाहता था कि वे जान जाएं कि वह बाकी लोगों को बचा लेगा और वह उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में फिर से बसा लेगा। हबक्कूक नबी सहित परमेश्वर की अपने लोगों के लिए यह तमन्ना थी कि वह उस में भरोसा रखें। इसी प्रकार से पौलुस चाहता था कि गलातिया के लोग व्यवस्था को मानने की अपनी योग्यता में नहीं बल्कि मसीह में भरोसा रखें।

आयत 12. व्यवस्था को मानकर अपनी ही धार्मिकता को स्थापित करना **विश्वास** के कायदे के उलट है (3:12), जैसा कि **से कोई सम्बन्ध नहीं**; वाक्यांश से संकेत दिया गया है। यहां व्यवस्था का नियम कि "**जो उनको मानेगा वह उनके कारण जीवित रहेगा**" लैव्यव्यवस्था 18:5 पर आधारित है। यह हवाला लूका 10:28 का आधार है, एक वकील के संदर्भ में जो साफ़ तौर पर सोचता है कि वह कानून की शर्तों को पूरा कर सकता है। यह रोमियों 10:5, 6 में भी मिलता है जहां पौलुस ने व्यवस्था के नियम और विश्वास के नियम में फिर अंतर किया।

आयत 13. मसीह ने जो हमारे लिये शापित बना, हमें व्यवस्था के शाप से छुड़ाया। उसने उन्हें "छुड़ाया" जो परमेश्वर व्यवस्था की आज्ञा न मानने के कारण दोषी थे (देखें 4:5)। "छुड़ाया" के लिए यूनानी शब्द (*exagorazō,* एक्सागोरेज़ो) है जो कि "मण्डी" (*agora,* अगोरा) के अर्थ वाला एक व्यवसायिक शब्द है। सरल रूप (*agorazō,* अगोरेज़ो) का इस्तेमाल कई बार गुलामों के छुटकारे के लिए किया जाता है।[26] क्रिया शब्दों *exagorazō* (एक्सागोरेज़ो) तथा *agorazō* (अगोरेज़ो) का अनुवाद "खरीदा" या "फिरौती" के लिए भी किया जा सकता है। सर्वनामों "हमें" का इस्तेमाल करके पौलुस अपनी और अपने यहूदी मसीही साथियों की बात कर रहा हो सकता है जो व्यवस्था की दासता में थे। छुटकारे की भाषा के सम्बन्ध में लियोन मौरिस ने टिप्पणी की है, "यह इस सच्चाई को बाहर लाता है कि पापी लोग अपने पाप से मुक्त नहीं हो सकते क्योंकि वे गुलाम हैं। यह इस बात पर भी ज़ोर देता है कि उनकी स्वतन्त्रता के लिए एक बड़ी कीमत चुकाई गई थी।"[27]

यीशु ने **हमारे लिए शापित बन** कर यानी क्रूस पर हमारी जगह अपना बलिदान देकर हमारे छुटकारे को पा लिया। पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 5:21 में इस अदला बदली के बारे में लिखा: "जो पाप से अज्ञात था, [परमेश्वर] को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" पतरस ने कहा कि यीशु "हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया" (1 पतरस 2:24)। उस हवाले में ESV में "क्रूस" के बजाय अधिक मूल अनुवाद "वृक्ष" है।

मसीह ने व्यवस्था का श्राप अपने ऊपर ले लिया **क्योंकि लिखा है, "जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।"** यूनानी शब्द *xulon* (ज़ुलोन) का अर्थ वृक्ष, खम्भा, या लकड़ी की बनी कोई चीज़ (जैसे क्रूस या खूंटा) हो सकता है।[28] "वृक्ष" के लिए इब्रानी शब्द (*'ets,* 'एट्स) का इस्तेमाल ऐसे ही हुआ है।[29] व्यवस्थाविवरण 21:23 के मूल संदर्भ में वृक्ष पर लटकाने का अर्थ खूंटे पर टांगना होता था। मरने के बाद आम तौर पर लोगों को लज्जित करने के लिए लाशें वृक्षों पर टांग दी जाती या लटका दी जाती (यहोशू 8:29; 10:26, 27; 2 शमूएल 21:6, 9)। टांगा जाना, प्रताड़ना और मृत्यु देने का एक ढंग भी होता था (एज्रा 6:11)। समय

बीतने के साथ-साथ टांगा जाना क्रूस पर चढ़ाए जाने में बदल गया जिसमें रोमियों ने महारत पा ली थी। इसे खास तौर पर गुलामों और अपराधियों के लिए मृत्यु दण्ड देने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। पौलुस ने इस वचन को जिसे मूल में मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए खूंटे पर टांगे जाने से सम्बधित था लागू किया।[30]

आयत 14. यह बलिदान क्रूस पर **इसलिये हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है**। यीशु ने उत्पत्ति 12:3 में की गई अब्राहम की प्रतिज्ञा को पूरा किया, कि उसके वंश के द्वारा सब जातियां आशीष पाएंगी (गलातियों 3:8 पर टिप्पणियां देखें)। अपनी मानवीय वंशावली के द्वारा यीशु अब्राहम का वंश था (मत्ती 1:1, 2; लूका 3:34) और उसके द्वारा सब लोगों ने असल में आशीषित होना था। सुसमाचार सब जातियों के लिए है (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:47)। तौभी अन्यजातियों में से लोग जो आशीषित हैं वे केवल वही हैं जो मसीह में और उसकी कलीसिया में हैं। यही सच्चाई आज यहूदियों के लिए भी है। जो लोग सुसमाचार की आज्ञा मानते हैं उन्हें "विश्वास के द्वारा आत्मा की प्रतिज्ञा" मिलती है (देखें प्रेरितों 2:38, 39; इफिसियों 1:13, 14)।

अब्राहम से प्रतिज्ञा व्यवस्था से पहले की गई (3:15-18)

[15]हे भाइयो, मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं; मनुष्य की वाचा भी जो पक्की हो जाती है, तो न कोई उसे टालता है और न उसमें कुछ बढ़ाता है। [16]अतः प्रतिज्ञाएं अब्राहम को और उसके वंश को दी गईं। वह यह नहीं कहता "वंशों को," जैसे बहुतों के विषय में कहा; पर जैसे एक के विषय में कि "तेरे वंश को" और वह मसीह है। [17]पर मैं यह कहता हूं: जो वाचा परमेश्वर ने पहले से पक्की की थी, उसको व्यवस्था चार सौ तीस वर्ष के बाद आकर नहीं टाल सकती कि प्रतिज्ञा व्यर्थ ठहरे। [18]क्योंकि यदि मीरास व्यवस्था से मिली है तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं, परन्तु परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा के द्वारा दे दी है।

पौलुस को यह उम्मीद होगी कि गलातिया के उसके पाठक पूछेंगे, "क्या मूसा की व्यवस्था अब्राहम को दी गई परमेश्वर की पिछली प्रतिज्ञाओं से बढ़कर नहीं होनी थी?" वह यह भी पूछ सकते थे कि "तब फिर [परमेश्वर ने] व्यवस्था [क्यों दी]?" (3:19क)। प्रेरित ने ऐसे प्रश्नों का उत्तर यह कहकर दिया होगा कि अब्राहम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा मूसा की व्यवस्था के लागू होने से बहुत पहले दी गई थी। उसका यह दावा था कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा को व्यवस्था से रद्द या बदला नहीं जा सकता।

आयत 15. 3:1 में पौलुस ने अपने पाठकों को चाहे "निर्बुद्धि गलातियो" कहकर सम्बोधित किया, परन्तु यहां पर उसने अधिक सकारात्मक शब्द **हे भाइयो** कहकर सम्बोधित किया। प्रेरित को उम्मीद थी कि उसके भाई पत्र का सकारात्मक जवाब देकर वास्तविक सुसमाचार की ओर लौट आएंगे। "हे भाइयो" शब्द आम तौर पर पत्र के नए भागों (या उप भागों) को दर्शाता है (1:11; 3:15; 4:12, 31; 5:11, 13; 6:1, 18)।

पौलुस ने अपने निष्कर्षों तक पहुंचने के लिए पुराने नियम के वचनों (3:6-14) के साथ-

साथ गलातियों के आत्मिक अनुभव (3:1-5) का इस्तेमाल किया। यहां पर **मनुष्य की रीति पर** बोलने लगा यानी उसने मानवीय सम्बन्धों के नियम लागू किए (देखें रोमियों 7:1-3; इफिसियों 5:22-33)। यानी जैसा कि NIV और NLT है, यह "दैनिक जीवन से उदाहरण" है। प्रेरित ने कहा, **मुनष्य की वाचा भी जो पक्की हो जाती है, तो न कोई उसे टालता है और न उसमें कुछ बढ़ाता है।** मनुष्यों के बीच कोई समझौता जब मंजूर कर दिया जाता है या पक्का कर लिया जाता है तो यह पूरा होने तक बे-बदल रहता है। इस तथ्य को अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर आसानी से लागू किया जा सकता है। पौलुस की व्याख्या का सामान्य विचार चाहे स्पष्ट है पर इसकी संक्षिप्त व्याख्या पर बहस हो चुकी है।

क्या 3:15 में *diathēkē* शब्द को जिसका अनुवाद "वाचा" हुआ है, "वसीयत" के रूप में अनुवाद किया जा सकता है (जैसे NRSV में है)? जोसेफस के लेखों में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द *diathēkē* (डियाथेक) का अर्थ "वसीयत" ही हुआ है। LXX में इस शब्द को "वाचा" (*bᵉrith*) के विकल्प के रूप में इस्तेमाल हुआ है।[31] यहां इस शब्द का अनुवाद क्या होना चाहिए? "वसीयत" होना चाहिए या "वाचा"? मौरिस ने तर्क दिया कि *diathēkē* शब्द का अर्थ 15 और 17 दोनों आयतों में "वाचा" हुआ है। उसने कहा, "मंजूर की गई वाचा का अर्थ है कि पक्षों में समझौता हुआ है और वाचा उस समझौते की शर्तों को दिखाती है।"[32]

इस शब्द का अनुवाद "वसीयत" के रूप में किए जाने के समर्थन में दिए जाने वाले तर्क में है: (1) शब्द का इस्तेमाल पौलुस द्वारा इसके साधारण अर्थ में (जोसेफ़स की तरह) किया और (2) संदर्भ में "विरासत" की भाषा मिलती है (3:18)। "वसीयत" के रूप में शब्द के अनुवाद का समर्थन करते हुए बोल्स ने कहा, "जो बात 'वसीयत' के लिए सांसारिक अर्थ में है वही 'वाचा' के लिए धार्मिक अर्थ में भी है। यानी एक बार मंजूर हो गई (या 'वसीयत हो गई') तो कोई उन्हें खारिज (*athetei,* अथेटि 'रद्द') नहीं कर सकता या उनमें जोड़ नहीं सकता (*epidiatassetai,* एपिडिएटेसेटि, 'में कोडपत्र जोड़ना')।"[33] इसलिए तर्क दिए जाते हैं, परन्तु अंत में कोई फर्क नहीं पड़ता। पौलुस का प्वायंट यह है कि अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा कायम थी और उसे आदर दिया जाता था।

पौलुस की बात की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में एक प्रश्न यह है कि क्या वह यूनानी व्यवस्था से ले रहा था? विलियम एम रैम्से ने यूनानी पृष्ठभूमि का समर्थन किया। उसका अवलोकन था कि यूनानी संसार के कई शहरों में, वसीयत की मान्यता इस पर निर्भर होती थी कि असल या उसकी प्रमाणित प्रति आधिकारिक रूप में पंजीकृत करके सरकारी रिकॉर्ड में रखी गई है या नहीं। यदि पहले से कोई वसीयत पढ़ी हो तो बाद वाली वसीयत को नकार दिया जाता या उसे रद्द कर दिया जाता है, जब तक पिछली वाली के उलट न हो। इसके विपरीत रोमी वसीयत को वसीयत करने वाले के द्वारा अपने जीते जी कई बार बदला जा सकता था परन्तु उसके मर जाने के बाद इसे बदला नहीं जा सकता था (देखें इब्रानियों 9:15-17; NIV)। रैम्से ने कहा कि "सबसे बाद में की गई वसीयत से बाकी सब वसीयतें रद्द हो जातीं।"[34]

आयत 16. पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि परमेश्वर की आशिषों को कमाया नहीं जा सकता बल्कि वे उसकी प्रतिज्ञाओं के कारण मिलती हैं, **अत: प्रतिज्ञाएं अब्राहम को और**

उसके वंश को दी गईं। वह यह नहीं कहता "वंशों को," जैसे बहुतों के विषय में कहा; पर जैसे एक के विषय में कि "तेरे वंश को" और वह मसीह है।

प्रेरित की बात को "वंश" की संख्या की रब्बियों की व्याख्या से मिलाया जा सकता है (कि यह एकवचन था या बहुवचन)। परमेश्वर के अब्राहम के साथ किए गए वायदे के लिए सप्तति (LXX) में अपने यूनानी प्रतिरूप के साथ उत्पत्ति की पूरी पुस्तक में (*sperma*, स्पर्मा) "वंश" या "वंशजों" के लिए इब्रानी शब्द (*zera'*) इस्तेमाल हुआ है।[35] यह शब्द एकवचन में है परन्तु इसका इस्तेमाल आम तौर पर सामूहिक रूप में किया जाता है। असल में NASB में इस शब्द का इस्तेमाल "वंशजों" के रूप में किया गया है।[36] उत्पत्ति 22:17, 18 एक अपवाद है और पौलुस के दिमाग में खासतौर पर यही वचन हो सकता है। वहां पर परमेश्वर ने अब्राहम को बताया, "पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगीं" (देखें उत्पत्ति 26:4; 28:14; NKJV)।

परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए प्रेरित पौलुस ने इस तथ्य में महत्व देखा कि "वंश" एकवचन में है और इस शब्द को यीशु मसीह के साथ मिलाया। इस एक "वंश" के द्वारा यानी मसीह में "सब जातियों ने आशीष [पानी थी]" (3:8) और उस एक "वंश" के द्वारा वे सब जो "परमेश्वर की संतान" हैं, "[परमेश्वर की] प्रतिज्ञा के साथ वारिस" हैं (3:26-29)।

आयत 17. 3:15 में पौलुस ने अब्राहम से बांधी गई परमेश्वर की वाचा को मानवीय सम्बन्धों से लागू किया: **पर मैं यह कहता हूं: जो वाचा परमेश्वर ने पहले से पक्की की थी, उसको व्यवस्था चार सौ तीस वर्ष के बाद आकर नहीं टाल सकती कि प्रतिज्ञा व्यर्थ ठहरे।** यदि वसीयतों को एक बार लागू होने के बाद बदला नहीं जा सकता तो मनुष्यों के साथ परमेश्वर की वाचाएं और भी कितनी अटल हैं। यह तर्क इस बात पर जोर देता है कि सीनै पर्वत पर परमेश्वर का मूसा को व्यवस्था देना किसी भी प्रकार से सदियों पहले अब्राहम से बांधी गई उसकी वाचा को व्यर्थ नहीं कर देता। अब्राहम से उसकी वाचा पहले दी गई थी और वह व्यवस्था से पहले थी।[37]

ऊपर से पढ़ने पर लगता है कि वचन अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा और मूसा को व्यवस्था दिए जाने को 430 सालों से अलग करता है। इस बदलाव में समस्या यह है कि निर्गमन 12:40, 41 के इब्रानी धर्मशास्त्र के अनुसार इस्राएलियों ने मिस्र में 430 साल बिताए। यह संख्या मिस्र में उनके प्रवास के लिए किसी और जगह पर मोटे तौर पर "400" से मेल खाती है (उत्पत्ति 15:13; प्रेरितों 7:6)।

संख्या में इस अंतर की एक व्याख्या यह है कि पौलुस "केवल अच्छा नाप दे रहा था कि इस्राएली इस दौरान मिस्र में थे और पुरखे इसके आरम्भ होने से पहले थे।"[38] इससे सम्बन्धित विचार यह है कि अब्राहम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा बाद में याकूब के साथ दोहराई गई (उत्पत्ति 28:14) और याकूब के समय में इस्राएली मिस्र में गए थे।[39]

एक और सम्भावना यह है कि पौलुस सप्तति (LXX) में निर्गमन 12:40, 41 का इस्तेमाल कर रहा था जो पुरखाओं के कनान में बिताए समय और इस्राएलियों के मिस्र में रहने के समय दोनों के लिए 430 साल बताता है। ऐसे में प्रेरित द्वारा बताए गए 430 वर्ष व्यवस्था दिए जाने की प्रतिज्ञा के समय से गिने गए होंगे। इस समाधान के साथ समस्या यह है कि यह उत्पत्ति 15:13

और प्रेरितों 7:6 में दिए गए संकेत के मिस्र में 400 वर्षों में हस्तक्षेप नहीं करता।

अब्राहम के साथ बांधी गई परमेश्वर की वाचा के सम्बन्ध में "पक्की की थी" शब्द का क्या अर्थ है? इसके लिए अंग्रेजी शब्द "ratified" इस संदर्भ में दो बार मिलता है। 3:15 में इसका अनुवाद यूनानी शब्द *kuroō* (कुरू) से लिया गया है जिसका अर्थ "मान्यता देना," "पक्का करना," या "कानूनी तौर पर लागू करना।" 3:17 में इस्तेमाल किया गया शब्द जिसका अनुवाद "पहले से पक्की की गई" हुआ है इससे सम्बन्धित शब्द *prokuroō* (प्रोकुरू) से लिया गया है जिसका अर्थ है "अग्रिम मंजूरी देना।"[40] अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा पर लागू करने पर इन शब्दों का अर्थ उस पुरखे के साथ परमेश्वर का शपथ खाना हो सकता है। इब्रानियों 6:13 कहता है, "और परमेश्वर ने इब्राहीम को प्रतिज्ञा देते समय जब कि शपथ खाने के लिए किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा।" इस घटना का विवरण उत्पत्ति 22:15-18 में मिलता है।

ऐसी पुष्टि का उद्देश्य, क्योंकि परमेश्वर झूठ नही बोल सकता (इब्रानियों 6:18), तसल्ली और आशा देना है। आशा मसीही व्यक्ति के विश्वास का आवश्यक पहलू है (इब्रानियों 11:1)। दुष्ट आत्माएं परमेश्वर में विश्वास रखती हैं, पर उन्हें कोई आशा नहीं है (याकूब 2:19)। आशा उस नये जन्म और उससे मिल ने वाले उद्धार के कारण सीधे मिलती है (1 पतरस 1:3, 13)।

आयत 18. ऊपर दिए गए तर्कों के आधार पर पौलुस ने निष्कर्ष निकाला कि **अब्राहम को** परमेश्वर की **प्रतिज्ञा** अपने आप में काफी थी यानी मूसा की **व्यवस्था** इसमें कुछ नहीं जोड़ सकती थी। नई वाचा में परमेश्वर के लोगों की **मीरास**[41] "अब्राहम के साथ" की गई उसकी प्रतिज्ञा पर आधारित थी (और है) न कि व्यवस्था पर। यदि व्यवस्था में कुछ अतिरिक्त बात थी जो उद्धार के लिए आवश्यक थी तो "प्रतिज्ञा के रूप में" परमेश्वर की "प्रतिज्ञा दोषयुक्त थी।"[42]

इन तर्कों से यह पता चलता है कि मनुष्यजाति के साथ परमेश्वर के व्यवहारों के आरम्भ से ही, परमेश्वर हमेशा से जिस तत्व को चाहता था वह विश्वास ही है। बेशक विश्वास को मनुष्य के जवाब से आम तौर पर परखा गया है वह चाहे किसी समय में परमेश्वर द्वारा दी गई किसी आज्ञा को मानने से या उसे न मानने से हो। इब्रानियों के लेखक के साथ हाबिल का बलिदान विश्वास का जवाब था (इब्रानियों 11:4), वैसे ही जैसे जहाज़ के बनाने में नूह का (इब्रानियों 11:7), कनान में जाने में अब्राहम का (इब्रानियों 11:8-10) और इसहाक को बलिदान करने के लिए अब्राहम की तैयारी (इब्रानियों 11:17-19)। अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा में इस नियम और घोषणा की पुष्टि (कर्मों पर आधारित मूसा की वाचा के उलट) वह रूपरेखा है जिसे पौलुस ने गलातियों की पत्री में उद्धार की अपनी चर्चा के लिए चुना। यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के साथ जिन्होंने विश्वासियों में गड़बड़ डाल दी थी उनकी समस्या के कारण यह बिल्कुल स्पष्ट था कि ऐसा ही था।

3:18 में क्रिया शब्द **दे दी** (*charizomai,* करिज़ोमाइ) संकेत देता है कि विश्वास से धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर का एक दान है। कर्मों से धर्मी ठहराया जाना (गलातियों के संदर्भ में) मनुष्य के लिए नामुमकिन है। कर्मों से धर्मी ठहराए जाने के लिए व्यक्ति के लिए पुराने नियम में दी गई परमेश्वर की हर आज्ञा को पूरी तरह से मानना आवश्यक होना था। सीनै पर्वत से दी गई व्यवस्था मनुष्य की घोर निराशा के कारण उसे दिए गए प्रकाशन में सहयोगी के रूप में थी,

कि वह खुद ही तय करे कि क्या अपने आप से धार्मिकता को पा सकता है। दूसरी ओर परमेश्वर की "विश्वास की व्यवस्था" (रोमियों 3:27) मनुष्य के दोष के साथ ही शुरू और खत्म होती है, ताकि उसे अपने पापी होने का अहसास हो सके, वह क्रूस के चरणों में आ सके और कृतज्ञपूर्ण समर्पण में यीशु को प्रभु मान सके। क्रूस पर यीशु ने पाप का प्रतीक बनकर परमेश्वर के प्रेम को दिखाया, ताकि हमारी जो कि सृष्टि है, अनंतकाल तक के लिए परमेश्वर की महिमा तक पहुंच हो सके (2 कुरिन्थियों 5:21; 8:9)।

यह अब्राहम और उसके वंश यानी हमें जो विश्वास करते हैं, दी गई प्रतिज्ञा का परमानंद है। हम इस परमानंद को अविश्वासी संसार के साथ बांटना चाहते हैं। जितना यह सच है कि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता, उतना ही यह प्रतिज्ञा क्रूस पर चढ़ाए गए हमारे प्रभु, यीशु नासरी में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की सारी संतान को दी गई है।

व्यवस्था की अपर्याप्तता (3:19-22)

[19]तब फिर व्यवस्था क्यों दी गई ? वह तो अपराधो के कारण बाद में दी गई कि उस वंश के आने तक रहे, जिस को प्रतिज्ञा दी गई थी; और वह स्वर्गदूतों के द्वारा एक मध्यस्थ के हाथ ठहराई गई। [20]मध्यस्थ तो एक का नहीं होता, परन्तु परमेश्वर एक ही है। [21]तो क्या व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरोध में है ? कदापि नहीं! क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे सकती, तो सचमुच धार्मिकता व्यवस्था से होती। [22]परन्तु पवित्रशास्त्र ने सब को पाप के अधीन कर दिया, ताकि वह प्रतिज्ञा जिसका आधार यीशु मसीह पर विश्वास करना है, विश्वास करनेवालों के लिये पूरी हो जाए।

आयत 19. अपने पाठकों और/या उनके बीच में से यहूदी मत की शिक्षा देने वालों से चुनौती की उम्मीद करते हुए प्रेरित ने उचित प्रश्न उठाए कि **तब फिर व्यवस्था क्यों दी गई ?** उसकी चर्चा के बाद यह लगा हो सकता है कि व्यवस्था का कोई उद्देश्य नहीं था। NIV में यह प्रश्न है "तो फिर, व्यवस्था दी ही क्यों गई ?" NKJV में कहा गया है, "तो व्यवस्था किस उद्देश्य को पूरा करती है ?" इन दोनों अनुवादों में इस विचार को बिल्कुल सही अनुवाद किया गया है। इस प्रश्न का उत्तर इतना आसान है नहीं जितना लग सकता है। बहुत से उत्तर (विशेषकर पाप से सम्बन्धित उत्तर) दिए जा सकते हैं, पर ये ध्यान देने योग्य हैं:

पवित्र, व्यक्तिगत परमेश्वर का और स्पष्ट प्रकाशन देना (रोमियों 1:18-20);

पाप और अपराध को प्रकट करना (रोमियों 3:9-20);

परमेश्वर के लोगों को उसकी अगम्य पवित्रता और सब लोगों के लिए उसकी पवित्रता की मांग की अवधारणा को परमेश्वर के लोगों को सिखाना (1 पतरस 1:15, 16; देखें निर्गमन 19:10-25; यशायाह 6:1-8);

चेतावनी देने वाले उदाहरणों और अनुग्रहकारी प्रतिज्ञाओं के द्वारा लोगों को पवित्र बनने के लिए उकसाना (रोमियों 11:22; 15:4; 1 कुरिन्थियों 10:1-13; यहूदा 5-8);

परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में इस्राएलियों को पाप से रोकने के लिए एक मानक देना और उन्हें उचित आचरण सिखाना (गलातियों 4:1-3);

सब लोगों को उनके अपराध की भयावहता को समझने में सहायता करना (3:10; रोमियों 5:20);

लोगों को अपने प्रयासों से अपने आपको बचाने की कोशिश की व्यर्थता को दिखाना (रोमियों 10:1-3; फिलिप्पियों 3:7-9);

भविष्यवाणियों तथा भविष्यवाणी के अलंकार (लूका 24:25-27; रोमियों 16:25, 26) के द्वारा आने वाले छुटकारा दिलाने वाले/मसीहा की गवाही देना (यूहन्ना 5:39);

मनुष्य के दोष की हद को दिखाते हुए परमेश्वर के अनुग्रह की महिमा की मात्रा को दिखाना (रोमियों 5:20, 21)।

पौलुस ने यह उत्तर दिया: **वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई कि उस वंश के आने तक रहे, जिस को प्रतिज्ञा दी गई थी।** व्यवस्था किस के "बाद में" दी गई। पौलुस दो वाचाओं की चर्चाकर रहा था? एक वाचा तो मूसा को दी गई व्यवस्था थी और दूसरी अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा वाली पहली वाचा थी। जैसा कि आम तौर पर कहा जाता है कि व्यवस्था उस "वंश" के आने तक, जो कि मसीह है (3:16) अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा के बाद जोड़ी गई थी (3:17)। व्यवस्था मसीह की ओर ले जाती थी और प्रतिज्ञा उसी में पूरी हुई (देखें यूहन्ना 1:17)। जब मसीह की मृत्यु के समय वह कोष्ठक बंद हो गया तो व्यवस्था का समय पूरा हो गया और नई वाचा मसीह के लहू के साथ पक्की कर दी गई (देखें इब्रानियों 9:17-28)।[43]

तो फिर व्यवस्था क्यों दी गई थी? पौलुस के उत्तर "अपराधों के कारण" को कम से कम दो प्रकार से समझा जाता है।

एक तरीका "के कारण" (*charin*) की व्याख्या व्यवस्था के लक्ष्य (यानी "अपराधों को *उत्पन्न करने*") के सम्बन्ध में है। वचन की इस व्याख्या को नये नियम के अन्य वचनों का समर्थन है। व्यवस्था ने पाप की परिभाषा दी (रोमियों 3:20; 4:15); वास्तव में इसने पाप को उकसाया (रोमियों 7:7-11) और इसने पाप को बढ़ाया (रोमियों 5:20)। व्यवस्था ने संसार पर दोष ठहराया! सबसे बढ़कर इसने यह प्रकट किया कि मनुष्य को पाप से उद्धार की आवश्यकता है पर यह उसके लिए उस उद्धार को दे नहीं पाई। पाप के दोष ने लोगों को परमेश्वर के अनुग्रह की अपनी आवश्यकता से परिचित करवाया। इस प्रकार से व्यवस्था एक उद्धारकर्त्ता के आने की ओर आगे को देखती थी और कई प्रकार से उस उद्धार की सहायक थी जिसे, सही समय आने पर, यीशु ने अपने बलिदान के द्वारा संसार में लाना था।

"के कारण" (*charin*, चेरिन) की व्याख्या करने का दूसरा ढंग व्यवस्था "के कारण" (यानी "हो चुके अपराधों *की बात*"[44]) का संकेत देना है। इस अर्थ को व्यवस्था के अलंकार के द्वारा इस अध्याय में आगे "शिक्षक" या "सरपरस्त" के रूप में समर्थन मिलता है (3:23-25 पर टिप्पणियां देखें)। परमेश्वर के लोग जब व्यवस्था ("शिक्षक") के अधीन थे तो इसका उद्देश्य उन्हें पाप करने से रोकना और विद्रोह करने पर उन्हें ताड़ना देना था। व्यवस्था की भूमिका परमेश्वर के लोगों को मसीहा के आने तक सीधे रखने की थी।

पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि व्यवस्था **स्वर्गदूतों के द्वारा एक मध्यस्थ के हाथ ठहराई गई**। उसने यह व्याख्या व्यवस्था को (जो परोक्ष रूप से स्थापित की गई थी) अब्राहम

के साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञा (जो सीधे दी गई थी) में अंतर के लिए दी। व्यक्तिगत होने के कारण अब्राहम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा को श्रेष्ठ बताया गया। पौलुस व्यवस्था से ईश्वरीय होने या इस तथ्य से इनकार नहीं कर रहा था कि इसकी आज्ञाएं "पवित्र और ठीक और अच्छी" थीं (रोमियों 7:12)। फिर भी जिस ढंग से परमेश्वर ने मूसा को व्यवस्था दी उसने इसे उस प्रतिज्ञा से जो उसने अब्राहम को दी थी नीचा कर दिया।

इस तथ्य का कि मूसा की वाचा के दिए जाने में स्वर्गदूत शामिल थे, निर्गमन में नहीं बताया गया। निर्गमन 32:34 में परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा नहीं की कि उसका "स्वर्गदूत" इस्राएल की अगुआई करेगा। यह वचन सीनै पर्वत पर व्यवस्था के दिए जाने के दो विवरणों के बीच रखा गया है (निर्गमन 24:15—32:16; 34:1-29)। फिर भी उन विवरणों के बीच असल में किसी स्वर्गदूत का उल्लेख नहीं है। व्यवस्थाविवरण 33:2 में "लाखों पवित्रों या 'स्वर्गदूतों' के मध्य में से" सीनै पर उतरते हुए केवल यहोवा को दिखाया गया (LXX)।

परन्तु नये नियम में स्तिफनुस ने मूसा के लिए बताया "यह वही है, जिसने जंगल में कलीसिया के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उससे बातें कीं" (प्रेरितों 7:38)। उसने यह भी कहा कि लोगों "ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया" (प्रेरितों 7:53)। इब्रानियों के लेखक ने कहा कि व्यवस्था "स्वर्गदूतों के द्वारा" दी गई थी (इब्रानियों 2:2)। परमेश्वर की प्रेरणा रहित यहूदी साहित्य स्वर्गदूतों को मूसा की वाचा दिए जाने से जोड़ता था।[45] यह विचार भजन संहिता 68:17 के साथ पुराने नियम के उस वचन पर आधारित था जो उद्धृत किया गया है: "परमेश्वर के रथ बीस हजार, वरन हजारों हजार हैं; प्रभु उनके बीच में है, जैसे वह सीनै पवित्र स्थान में है।"

परमेश्वर और लोगों के बीच "मध्यस्थ" (*mesitēs*) के रूप में मूसा की भूमिका स्पष्ट है। निर्गमन 20:19 में इस्राएलियों ने मूसा से कहा, "तू ही हम से बातें कर, तब तो हम सुन सकेंगे, परन्तु परमेश्वर हम से बातें न करें, ऐसा न हो कि हम मर जाएं।" व्यवस्थाविवरण 5:5 में, मूसा ने याद किया कि वह यहोवा के "और [लोगों के] बीच उसका वचन [उन्हें] बताने को खड़ा रहा।"

आयत 19 में "के हाथ" *en cheiri* का एक अच्छा अनुवाद है। इसका समानांतर लैव्यव्यवस्था 26:46 में मिलता है: "जो जो विधियां और नियम और व्यवस्था यहोवा ने अपनी ओर से इस्राएलियों के लिये सीनै पर्वत पर मूसा *के द्वारा* ठहराई थीं वे ये ही हैं।" "के द्वारा" के बजाय इब्रानी धर्मशास्त्र में मूलतया "के हाथ" है (*b^{e}yad*) है (देखें KJV)।

आयत 20. मध्यस्थ तो एक का नहीं होता, परन्तु परमेश्वर एक ही है। इस पूरी आयत का अर्थ अस्पष्ट है। इस वाक्य के दो स्वतन्त्र भाग हैं जो कठिन नहीं हैं। पहला भाग कहता है कि "मध्यस्थ" किसी "एक पक्ष का" नहीं बल्कि दो पक्षों का होता हैं। जैसा कि पहले देखा गया था प्रेरितों 7:38 मूसा को सीनै पर्वत पर स्वर्गदूत और इस्राएलियों के बीच जो वहां इकट्ठा हुए थे मध्यस्थता करने वाले के रूप में दिखाता है। दूसरा भाग परमेश्वर के एक होने पर ज़ोर देता है। परमेश्वर का एक होना यहूदी विश्वास की बुनियाद थी (और अब भी है)। यहूदियों द्वारा प्रतिदिन दोहराए जाने वाले शेमा में कहा जाता है, "हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, *यहोवा एक ही* है!" (व्यवस्थाविवरण 6:4)।

पूरी आयत की सबसे सम्भावित व्याख्या यह है: यह व्यवस्था (परमेश्वर की ओर से स्वर्गदूतों और मूसा *के द्वारा* लोगों के लिए दी गई) और उत्तम प्रतिज्ञा (परमेश्वर द्वारा अब्राहम को *सीधे* दी गई) के बीच अंतर है।

आयत 21. पौलुस के तर्क से कुछ मसीही यह मानने लगे हो सकते हैं कि मूसा की व्यवस्था और अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा का आपस में विवाद है। किसी भी गलतफहमी को निकालने के लिए पौलुस ने लिखा **तो क्या व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरोध में है? कदापि नहीं!** प्रेरित ने पुष्टि की कि व्यवस्था का उद्देश्य **जीवन देना** था यानी पापियों को धर्मी ठहराना नहीं था। **व्यवस्था से** कोई धर्मी नहीं बन सकता था। इसके बजाय धार्मिकता अब्राहम के वंश यानी मसीह के द्वारा सब जातियों को आशीष देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा का पूरा होना है (देखें रोमियों 7; 8)। दोनों ने एक ही उद्देश्य को पूरा नहीं किया बल्कि वे एक दूसरे की पूरक थीं।

आयत 22. पौलुस ने निष्कर्ष निकाला, **परन्तु पवित्रशास्त्र ने सब को पाप के अधीन कर दिया, ताकि वह प्रतिज्ञा जिसका आधार यीशु मसीह पर विश्वास करना है, विश्वास करनेवालों के लिये पूरी हो जाए।** "पवित्र शास्त्र" से क्या अर्थ है? यह वाक्यांश पुराने नियम का सामान्य हवाला हो सकता है जो कि मनुष्य के पापी होने की पुष्टि करता है। रोमियों 3:10-18 के प्रेरित ने पुराने नियम के कई वचनों को इकट्ठे जोड़कर इसी बात को साबित किया।

"पवित्र शास्त्र" (*hē graphē*, हे ग्राफे) एकवचन में है, इस कारण शायद पौलुस किसी विशेष वचन की बात कर रहा था।[46] एक सम्भावित वचन भजन संहिता 143:2 है, जिसका संकेत गलातियों 2:16 में है: "व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा।" एक और वचन जिसका संकेत दिया जा सकता है वह व्यवस्थाविवरण 27:26 है, जो गलातियों 3:10 में दोहराया गया है: "जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है।"

फिर दोबारा से "पवित्र शास्त्र" व्यवस्था के बराबर भी हो सकता है। मूसा की व्यवस्था, जो परमेश्वर के लोगों को पापियों के रूप में दोषी ठहराती थी, ने यहूदियों को पापियों के रूप में बंदी रखा था।

परमेश्वर के लोगों की पापपूर्ण स्थिति को साबित करके पौलुस ने विश्वास के नियम का रास्ता तैयार किया कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा "यीशु मसीह में विश्वास" के द्वारा मिलती है" न कि व्यवस्था के कामों के द्वारा।

व्यवस्था का अस्थाई स्वभाव: मसीह तक पहुंचाने वाला शिक्षक (3:23-29)

[23]पर विश्वास के आने से पहले व्यवस्था की अधीनता में हमारी रखवाली होती थी, और उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होनेवाला था, हम उसी के बन्धन में रहे। [24]इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने के लिये हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। [25]परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे। [26]क्योंकि

तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। [27]और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। [28]अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतन्त्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। [29]और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।

आयत 23. यूनानी धर्म शास्त्र में **विश्वास** से पहले एक निश्चित उपपद (*tēn pistin*, टेन पिस्टिन) है जो इस वाक्यांश का अर्थ "the faith" (एक ही विश्वास) बना सकता है। इससे कुछ लोग यह सोचने लगते हैं कि यह नई वाचा की सामान्य शिक्षा है (यहूदा 3)। यह विचार चाहे आयत की स्कीम के साथ मेल खाता परन्तु 3:22 की तरह विश्वास का इस्तेमाल व्यक्तिगत ढंग से किया जा सकता है ("यीशु मसीह में विश्वास")। कोई भी व्याख्या उसी समय अवधि से यानी पहली सदी ई. से जुड़ जाएगी जब यीशु की सेवकाई और उसकी कलीसिया की स्थापना हुई।

इस समय से पूर्व, यहूदी लोगों की मूसा **व्यवस्था की अधीनता में हमारी रखवाली होती थी, और उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होनेवाला था, हम उसी के बन्धन में रहे।** "रखवाली होती थी" (*phroureō*, फरोरियो) और "बंधन में रहे" (*sunkleiō*, सनक्लेयो) को कारावास या कैद से जोड़ा जा सकता है। यह हो सकता है कि व्यवस्था को अलंकारिक रूप में जेल के वार्डन के रूप में दिखाया जा रहा हो। *Phroureō* शब्द "जेलों के कैदियों के उनके केस निपटने तक उन्हें मुख्य रूप में कैदी रखने के इस्तेमाल [के साथ] मेल खाता है।"[47] परन्तु इस संदर्भ में यह शब्द आयतें 24 और 25 वाले "शिक्षक" या "सरपरस्त" की भूमिका से जुड़ सकते हैं। ऐसे में, शिक्षक की तरह व्यवस्था ने जब तक प्रभावी रही तब तक रोकने वाले बल के रूप में काम किया।

आयत 24. पौलुस ने आगे कहा, **इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने के लिये हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें।** "शिक्षक" के लिए यूनानी शब्द (*paidagōgos*, पेडागोगोस) *agōgos* (अगोगोस, के साथ *pais* पेइस, "बालक") को मिलाने वाला एक मिश्रित शब्द है। इस शब्द का मूल अर्थ "बालक अगुआ" है। अन्य संस्करणों में इस शब्द का अनुवाद "संरक्षक" (RSV), "अनुशासक" (NRSV), या "सरपरस्त" (ESV) के रूप में हुआ है। परम्परागत अनुवाद "स्कूल मास्टर" (KJV) सही सही रूप को नहीं दर्शाता।[48] *Paidagōgos* (पेडागोगोस) औसतन पारिवारिक गुलाम होता था जिसकी ज़िम्मेदारी किशोर को अगुआई देने की होती थी जब तक वह प्रौढ़ नहीं हो जाता (देखें NASB)। वह "स्कूल मास्टर" या "शिक्षक" (*didaskalos*, डिडास्कलोस) नहीं बल्कि वह व्यक्ति होता था जो लड़के को कक्षा तक लेकर जाता था। वह एक नैतिक सलाहकार, रक्षक और कठोर अनुशासक होता था।[49]

Paidagōgos (पेडागोगोस) प्रथा कम से कम 5वीं सदी ई.पू. पुरानी है, शायद यूनान से आरम्भ हुई।[50] यूनानियों के अलावा रोमियों द्वारा भी इसका खूब इस्तेमाल किया जाता था। शायद कुछ धनवान यहूदी भी ऐसा करते थे।

निजी गुलाम-सहायक स्वतन्त्र-जन्मे बालक का उसकी दाई की देखभाल छूट जाने के बाद से ध्यान रखता था। यह पूर्णकालिक कार्य था यानी संरक्षक का काम बालक को सुबह जगाने और रात को सुलाने तक होता था।[51] लड़के को अच्छी आदतें सिखाना इस गुलाम की ज़िम्मेदारी होती थी जैसे सही ढंग से बैठना उठना, सही ढंग से बड़ों के सामने खड़े होना, ज्यादा खाना नहीं, चीखकर बात नहीं करना।[52] यदि लड़का आज्ञा न मानने वाला हो तो गुलाम-सहायक उसे छांटे से या छड़ी से पिटाई कर देता।

लड़के को स्कूल ले जाने के समय *paidagōgos* (पेडागोगोस) उसकी लिखने वाली पट्टियां, उसकी पुस्तकें, और उसके गाने वाले साज (वीणा या बांसुरी होंगे) ले जाता। गुलाम वहां उसकी राह देखता, उसके क्लासरूम में या फिर गुलाम-सहायकों के लिए बने विशेष कमरे में। क्लास के बाद वह लड़के को घर ले जाता और उससे उसके पाठ दोहरवाता। बालक के अवयस्क रहने तक गुलाम-सहायक "उसकी स्वतन्त्रता पर आवश्यक रोक लगाता, उसके बड़ा होने पर, उसे अपनी स्वतन्त्रता का इस्तेमाल ज़िम्मेदारी से करने के लिए उस पर भरोसा किया जा सकता था।"[53]

सात से उन्नीस की उम्र होने तक एक अवयस्क को संरक्षक की निगरानी में रहना पड़ता। इस सम्बन्ध का समय खत्म होने का सही-सही "पिता के ठहराए हुए समय" पर आधारित होता था (4:2)। किशोर जब वयस्क हो जाता तो उसको निगरानी से छूट मिल जाती। *Paidagōgos* (पेडागोगोस) का ज़िनोफोन का विवरण हमारे लिए सहायक है: "जब लड़का बच्चा नहीं रहता और युवक बनने लगता है, तो दूसरे लोग उसके नैतिक शिक्षक [*paidagōgos*, पेडागोगोस] और उसके स्कूल मास्टर [*didaskalos*, डिडास्कालोस] से छोड़ देते हैं जो कि अब वह हाकिम के अधीन नहीं रहा और उसे जहां चाहे जाने की मर्जी है।"[54] जब बच्चे को उसके शिक्षक या संरक्षक से छुड़ाया जाता तो वह उन बुनियादी नियमों (*stoicheia,* स्टोकेया) जो उसने सीखे होते थे भुला नहीं सकता था या नज़रअंदाज नहीं कर सकता था।

व्यवस्था ने इस बात में महत्वपूर्ण काम किया कि इसने लोगों को मसीह में विश्वास के लिए (प्रौढ़ता) तैयार किया। इसने यहूदियों को परमेश्वर के स्वभाव के बारे में बताया और उन पर पाप का दोष लगाया। यीशु के द्वारा उद्धार तक ले जाने के लिए उनके लिए ये महत्वपूर्ण बातें आवश्यक थीं।

आयत 25. एक सरपस्त की तरह, व्यवस्था ने केवल सीमित समय के लिए काम किया। पौलुस ने समझाया, **परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे।** सर्वनाम शब्द "हम" का इस्तेमाल करके वह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि वह और उसके साथी यहूदी अब व्यवस्था की देखरेख में नहीं रहे। इसका उद्देश्य परमेश्वर के लोगों के आचरण को मसीह के आने तक तथा वयस्क होने की उम्र तक संचालित करना था। जीवन पद्धति के रूप में व्यवस्था की ओर लौटना किसी युवा के अपने संरक्षक की देखरेख से छूट जाने के बाद फिर से उसकी ओर वापस जाने के जैसा होना था। उसने "उम्र होने से उसे जो स्वतन्त्रता, अधिकार और सुविधाएं मिली थीं उन से अलग" हो जाना था (तुलना गलातियों 4:1-7)।[55]

आयत 26. पौलुस उत्तम पुरुष बहुवचन ("हम" यानी यहूदियों) से मध्यमपुरुष बहुवचन ("तुम" यानी गलातिया के मसीही) में आ गया। वह अपने पाठकों से सीधे बात कर रहा था

जिसमें यहूदी और अन्यजाति मसीही दोनों थे। प्रेरित ने लिखा **क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो।** पौलुस ने ''परमेश्वर की संतान'' का वाक्यांश का उपयोग जानबूझकर किया क्योंकि यहूदी दायरों में इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल विशेष तौर पर इस्राएलियों के लिए किया जाता था।[56] पहली सदी के समय के निकट लिखी गई यहूदी पुस्तकों में यह मिलती है।[57] प्रेरित ने यहूदी हों या अन्यजाति सब मसीहियों के लिए इसको लागू किया।

वे सब व्यवस्था के प्रति अपनी निष्ठा के कारण नहीं बल्कि ''मसीह यीशु में विश्वास'' के कारण ''परमेश्वर की संतान'' थे। उन्हें परमेश्वर के आत्मिक परिवार में गोद लिया गया था और उन में उसके आत्मा का वास होने के कारण उसका अक्स था (रोमियों 8:9-17)। कुछ संस्करणों में जहां यहां पर लिंग-सहित भाषा का इस्तेमाल है (उदाहरण के लिए NRSV में ''बच्चे'') वहीं यूनानी धर्मशास्त्र में ''पुत्र'' (*huioi*, हुइयोइ) है। मीरास के प्रभावों के कारण इस विशेष शब्द का महत्व है। प्राचीन संसार में मीरास आम तौर पर पुत्रों को मिलती थी।

आयत 27. विश्वास के नियम को समझाते हुए पौलुस ने आगे कहा, **और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।** सुसमाचार के संदेश पर विश्वास करने पर गलातियों ने ''बपतिस्मा लिया'' (*baptizō*, बैपटिज़ो) यानी पानी में डुबकी ली थी।[58] प्रेरितों की काम की पुस्तक दक्षिणी गलातिया में पहली मिशनरी यात्रा के सम्बन्ध में बपतिस्मे का कोई विशेष उल्लेख नहीं है। यह पिसिदिया के अंताकिया के उन अन्यजातियों की बात करती हैं जिन्होंने ''विश्वास किया'' (प्रेरितों 13:14, 48), इकुनियुम के यहूदियों और अन्यजातियों की जिन्होंने ''विश्वास किया'' (प्रेरितों 14:1) और दिरबे के ''बहुत से चेले'' बनने की (प्रेरितों 14:20, 21)। तौभी ''विश्वास किया'' प्रेरितों के काम में आम तौर पर विस्तार से मनपरिवर्तन की पूरी प्रक्रिया को बताने के लिए किया गया है। इस प्रकार से इस्तेमाल किए जाने पर इसमें विश्वास, मन फिराव, अंगीकार और बपतिस्मा भी शामिल होता है।

सुसमाचार के विवरणों (मत्ती 28:19; मरकुस 16:16; यूहन्ना 3:5), प्रेरितों के काम (प्रेरितों 2:38, 41; 8:38; 10:47, 48; 16:15, 33; 18:8; 19:5; 22:16), और पत्रियों (रोमियों 6:3, 4; 1 कुरिन्थियों 6:11; 12:13; कुलुस्सियों 2:12; तीतुस 3:5; 1 पतरस 3:21) में मसीह में उद्धार तथा उसकी कलीसिया में प्रवेश के लिए पानी के बपतिस्मे की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है। जब कोई ''मसीह में बपतिस्मा'' लेता है तो वह उसके साथ एक हो जाता है और उसे उसकी मृत्यु तथा जी उठने की आशा मिल जाती है। असल में बपतिस्मे की घटना अपने आप में मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने को याद दिलाती है। विश्वासी व्यक्ति बपतिस्मे के पानी में पाप के लिए मर जाता है और नया जीवन जीने के लिए जी उठता है (रोमियों 6:3, 4; कुलुस्सियों 2:12)। यहां पर पौलुस इसे ''मसीह को पहन'' लेने के रूप में वर्णित करता है जिसे उसकी धार्मिकता को पहनना कहा जा सकता है (देखें 2 कुरिन्थियों 5:21)। एक आत्मिक तरीके से बपतिस्मा नये कपड़े पहनने की तरह है। पाप के गंदे चीथड़े पहनने के बजाय (यशायाह 64:6), मसीही लोगों को मसीह की धार्मिकता पहनाई जाती है (देखें प्रकाशितवाक्य 3:4; 6:11)। हम उसके ''व्यवहारों, गुणों और इरादों'' को अपनाना चुनते हैं।[59]

आयत 28. पौलुस ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि इस उद्धार में एक सुन्दर समानता

की बात मिलती है: **अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतन्त्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।** पौलुस यह नहीं कह रहा था कि बपतिस्मा लेने पर व्यक्ति "यहूदी" या "यूनानी" "दास" या "स्वतन्त्र," या "नर" या "नारी" नहीं रहता। उदाहरण के लिए किसी की जातीय विरासत नहीं बदल सकती। इसके बजाय पौलुस इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि मसीह में सबके लिए समान रुतबा है।[60] कहते हैं कि "क्रूस के कदमों में ज़मीन समतल है।" सब लोग एक ही तरह से मसीही बनते हैं और एक ही प्रकार से सब लोग परमेश्वर के लिए मूल्यवान हैं। सब को मसीह पहनाया गया है और वे उसके हैं। परमेश्वर के राज्य में दूसरे दर्जे का नागरिक कोई नहीं होता।

पौलुस का तिहरा विभाजन महत्वपूर्ण है क्योंकि अन्यजातियों, दासों और स्त्रियों को आम तौर पर उस भूमि में मीरास नहीं मिलती थी जो इस्राएलियों की होती थी। तौभी सभी को "परमेश्वर की संतान" (3:26) और "वारिस" (3:29) कहा गया। इन तीनों समूहों को "एक ही बपतिस्मा" मिला था और उन्हें "एक ही देह" में मिलाया गया था (इफिसियों 4:4, 5)। वे असली वारिस मसीह के साथ एक हो गए थे, जो उन्हें उसके साथ "संगी वारिस" बना देता है (रोमियों 8:17)।

"मसीह में" होने वालों की बराबरी इस तथ्य को नकारती नहीं है कि परमेश्वर ने कलीसिया में और घर में स्त्री-पुरुष की भूमिकाओं में अंतर किया है।[61] इस सच्चाई को 1 पतरस 3:1-7 में साबित किया गया जहां पत्नी को अपने पति के अधीन होने की आज्ञा दी गई है और पति को अपनी पत्नी को निर्बल साथी जानकर उसका ध्यान रखने का निर्देश दिया गया है। वचन में स्त्री पुरुष के अंतर स्पष्ट हैं, फिर भी पत्नी को अपने पति के साथ "जीवन के अनुग्रह के संगी वारिस" के रूप में बताया गया है। उनकी भूमिकाएं चाहे अलग अलग हैं पर परमेश्वर के राज्य में उन्हें बराबरी का दर्जा दिया गया है। एफ़. लेगार्ड स्मिथ ने खेलों के रूपक के साथ इस नियम को समझाया है। सभी एक ही टीम में होते हैं, "पर सभी एक ही पोज़िशन में खेलते" नहीं हैं।[62]

आयत 29. अपने पत्र के इस भाग में पौलुस ने इस पहचान के साथ खत्म किया: **और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो** (देखें 3:7-9)। जो लोग मसीह (अब्राहम का "वंश") में हैं, पहचान के द्वारा वे "अब्राहम के वंश" हैं। मसीह में उनको विशेष रुतबा उन्हें "प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस" बना देता है यानी उस प्रतिज्ञा के अनुसार जो परमेश्वर ने अब्राहम को दी थी। इसलिए अन्यजाति मसीही विश्वास के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञा को प्राप्त करते हैं यानी उन्हें मूसा की व्यवस्था को मानने की कोई आवश्यकता नहीं है।

प्रासंगिकता

मसीह की श्रेष्ठता (अध्याय 3)

गलातियों 3 में हमने कई ढंगों को देखा है जिनसे पौलुस ने व्यवस्था पर मसीह में विश्वास की श्रेष्ठता को दिखाया।

आत्मा का प्रमाण (3:1-5)। गलातिया के मसीहियों को यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा

व्यक्तिगत रूप में पवित्र आत्मा मिला था न कि उनके व्यवस्था की आज्ञा मानने के द्वारा। उन्हें मसीह में बपतिस्मा लेने पर आत्मा के वास का दान मिला था (देखें 3:2, 26, 27; प्रेरितों 2:38; तीतुस 3:5), और उन्हें आत्मा के चमत्कारी दान भी दिए गए थे (देखें प्रेरितों 8:12-17; 19:5, 6)। यह तथ्य कि पवित्र आत्मा ने यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के आने से पहले गलातिया के मसीही लोगों के द्वारा आश्चर्यकर्म किए थे से यह स्पष्ट हो जाना चाहिए था कि उन्हें व्यवस्था को माने बिना परमेश्वर द्वारा स्वीकार कर लिया गया था। उन्हें यीशु मसीह में विश्वास के आधार पर स्वीकार किया गया था।

अब्राहम का नमूना (3:6-9)। यहूदियों का पूर्वज अब्राहम विश्वास के नियम के नमूने (या उदाहरण) का काम करता है। परमेश्वर ने अब्राहम से तब बात की जब वह हारान में रह रहा था और उसे अपनी कीमती प्रतिज्ञाएं दीं। इन घोषणाओं में परमेश्वर ने कहा कि अब्राहम के द्वारा "भूमण्डल के सारे कुल आशीष पाएंगे" (उत्पत्ति 12:3)। इन शब्दों में मसीह के सुसमाचार की भविष्यवाणी थी, क्योंकि अपनी मानवीय वंशावली के अनुसार, यीशु अब्राहम का वंश था (गलातियां 3:8)। बाद में अब्राहम के कनान देश में चले जाने के बाद परमेश्वर ने उससे प्रतिज्ञा की कि उसका एक पुत्र होगा और उसकी संतान आकाश के तारों की तरह अनगिनत होगी (उत्पत्ति 15:4, 5)। जवाब में अब्राहम ने "यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लिए धर्म के नाम में गिना" (उत्पत्ति 15:6)। मसीह में विश्वास के द्वारा जीने वाले लोग "विश्वासी अब्राहम" के पदचिह्नों पर चल रहे हैं और उन्हें उसी के साथ आशीष मिलेगी (गलातियों 3:9)।

व्यवस्था की आज्ञा तोड़ने वालों के लिए दण्ड (3:10-14, 19-22)। व्यवस्था को मानकर अपनी ही धार्मिकता को स्थापित करने का प्रयास करने वाले श्राप के अधीन हैं। यह सच है क्योंकि व्यवस्था का नियम सिद्धता की मांग करता है: "क्योंकि लिखा है, 'जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है' " (3:10)। और तो और परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरी तरह से कोई भी पूरा नहीं कर सकता: "इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। परन्तु यीशु ने पाप रहित जीवन जिया और जब वह क्रूस पर मरा तो उसने पाप का श्राप अपने ऊपर ले लिया। "जो पाप से अज्ञात था, उसी को परमेश्वर ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं" (2 कुरिन्थियों 5:21)। इस कारण, बेशक हम पापी हैं परन्तु फिर भी यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा हमें धर्मी माना जा सकता है।

अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं की प्राथमिकता (3:15-18)। अब्राहम को दी गईं परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं (उत्पत्ति 12—22) व्यवस्था के दिए जाने से सैकड़ों वर्षों पहले की थीं (निर्गमन 19—24)। परमेश्वर ने अब्राहम के साथ अपनी वाचा को शपथ खाकर पक्का किया था (उत्पत्ति 22:15-18)। उसने अब्राहम से सीधे बात की थी जबकि व्यवस्था इस्राएलियों को स्वर्गदूतों और मध्यस्थ (मूसा) के माध्यम से दी गई। इन कारणों से परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को व्यवस्था से वरीयता दी गई। व्यवस्था ने किसी भी प्रकार से उस वाचा को जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बांधी थी, भंग नहीं करना था। खासकर परमेश्वर ने "वंश" की प्रतिज्ञा दी थी जिसे हम गलातियों 3:16 से जानते हैं कि वह मसीह के आने की भविष्यवाणी थी। परमेश्वर ने कहा था, "पृथ्वी की

सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी'' (उत्पत्ति 22:18)।

व्यवस्था का उद्देश्य (3:23-29)। व्यवस्था किसी की अपनी ही धार्मिकता को स्थापित करने के लिए नहीं बल्कि मसीह के आने तक शिक्षक होने के लिए दी गई थी। तुलना के लिए पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया रूपक एक गुलाम-सहायक का है जो यूनानी-रोमी संसार में बड़े हो रहे लड़के की परवरिश के लिए जिम्मेदार होता है (3:24)। उस लड़के के वयस्क हो जाने पर संरक्षक अपने दायित्वों से छूट जाता था। इसी प्रकार से व्यवस्था को अस्थाई होने के लिए दिया गया था। इसमें यहूदियों को परमेश्वर और धार्मिकता के बहुत से बुनियादी नियम सिखाए गए, उन्हें पाप और विद्रोह के विरुद्ध चेतावनी देते हुए। परन्तु जब मसीह ने अपने मिशन को पूरा कर लिया (अर्थात जब वह वयस्क हो गया) तो व्यवस्था की कोई आवश्यकता नहीं रही (संरक्षक को मुक्त कर दिया गया)। इसका उद्देश्य पूरा हो गया था।

क्रूस पर दिया गया मसीह (3:1)

गलातिया में प्रचार करते हुए पौलुस ने क्रूस पर यीशु की प्रायश्चित वाली मृत्यु को साफ़ साफ समझाया था (3:1)। कुरिन्थुस में अपने कार्य के सम्बन्ध में प्रेरित ने लिखा, ''क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, बरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं'' (1 कुरिन्थियों 2:2)। पौलुस यह नहीं कह रहा था कि उसने यीशु की मृत्यु ही उसकी चर्चा का एकमात्र विषय था बल्कि यह कि यह उसके संदेश का सार था। इसी पत्र में बाद में उसने लिखा, ''इसी कारण मैं ने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा'' (1 कुरिन्थियों 15:3, 4)।

आज हमारे संदेश का केन्द्र यीशु का बलिदान होना आवश्यक है। क्रूस के अर्थ के साथ साथ मसीह के दुख सहने और कष्ट को दिखाकर हम लोगों को परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह को समझने में सहायता कर सकते हैं। यीशु की मृत्यु को नज़दीकी से देखकर लोगों को पाप के ठोकर दिलाने वाले स्वभाव को समझने में सहायता मिल सकती है जिसके लिए वह प्रायश्चित बना। यह उद्धारकर्त्ता के रूप में यीशु में जो कि पाप का एकमात्र बलिदान है, गहरा भरोसा भी डाल सकता है।

परमेश्वर ने अपनी कलीसिया के सामने एक यादगार रखी है जिसके द्वारा हम प्रत्येक सप्ताह यीशु की मृत्यु को याद करते हैं। प्रभु के दिन हम प्रभु भोज मनाते हैं (प्रेरितों 20:7)। मसीह के दुख सहने को यह बार बार याद दिलाना हमें अपने भले कामों या अपनी धार्मिकता में भरोसा करने से रोकने वाला होना चाहिए। इसके अलावा इससे क्रूस पर दिए और जी उठे प्रभु में हमारा विश्वास और गहरा होना चाहिए। प्रतीकों में भाग लेते हुए हम केवल उसकी देह और लहू को याद ही नहीं करते बल्कि प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए प्रचार भी करते हैं (1 कुरिन्थियों 11:26)।

वाचाओं के बीच अंतर (3:3)

गलातियों 3:3 में पौलुस ने पूछा, ''आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति

पर अन्त करोगे?'' दो वाचाओं के सम्बन्ध में विचार की तुलनाओं से यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि उनके बीच अंतर केवल उनकी *सामग्री* का ही नहीं बल्कि उनके *आवश्यक स्वभाव* का भी है। सदियां बीत जाने से धीरे धीरे करे मसीही जीवन और आराधना में सांसारिक, शारीरिक बातें जोड़ दी गई हैं। ये आत्मा के साथ मेल नहीं खातीं। मार्टिन लूथर तथा अन्य सुधारकों ने उन रीतियों की सफ़ाई का आरम्भ किया जिनका विश्वास के मसीही सिस्टम में कोई स्थान नहीं है, परन्तु बार बार उनकी ओर झुकाव पुराने नियम की रीतियों को फिर से वापस ले आई हैं। आज हमारे समय बहुत से लोग जो मसीही होने का दावा करते हैं वाचाओं के बीच कोई स्पष्ट अंतर को समझ नहीं पाते। हम यहां केवल बाहरी की बात नहीं कर रहे जैसा कि कुछ लोग कहेंगे बल्कि मसीह के सुसमाचार के *सार* की बात कर रहे हैं। *गलातियों का पत्र कर्मकाण्ड पर लेख नहीं है जैसे कि पौलुस नये नियम की शिक्षा के प्रति कर्मकांडी व्यवहारों की बात कर रहा हो।* नये नियम में ''कर्मकांड'' इस प्रकार से कहीं भी लागू नहीं हुआ है। सुसमाचार के बिगाड़ जिसकी बात गलातियों 1:6-8 में पौलुस ने की, का ज़ोरदार विरोध किया कि मसीही लोगों पर *मूसा* की व्यवस्था थोपने का है। पौलुस से बढ़कर अनुग्रह के द्वारा उद्धार पर ज़ोर और कोई नहीं दे सकता। परन्तु उसने उस आज्ञापालन के विरुद्ध इस अनुग्रह को *कभी नहीं* रखा जिसकी परमेश्वर उन सबसे जो मसीह के चेले बनेंगे उम्मीद करता।

व्यवस्था से छुटकारा (3:10-14)

गलातियों 3:10-14 में पौलुस ने समझाया कि व्यवस्था को मानकर अपने आपको धर्मी ठहराने की कोशिश करने वाले लोग श्राप के अधीन हैं। यह सच है क्योंकि व्यवस्था पूरी तरह से आज्ञापालन की मांग करती है। परन्तु पापरहित मसीह ने जब पापियों के लिए दुख सहकर मौत सही तो उसने व्यवस्था का श्राप अपने ऊपर ले लिया। इसलिए यीशु में विश्वास के द्वारा हमें उद्धार की आशीषें और आत्मा का वास मिल सकता है। रोमियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने ऐसे ही विचार व्यक्त किए:

> क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पापबलि होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। इसलिये कि व्यवस्था की विधि [*dikaiōma*] हममें जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए (रोमियों 8:3, 4)।

कोई और तरीका ही नहीं था! व्यवस्था की यह ''विधि'' मनुष्य के लिए तो थी ही परमेश्वर के लिए भी अपरिवर्तनशील थी क्योंकि व्यवस्था पूर्ण आज्ञापालन की मांग करती है। कठोर अर्थ में व्यवस्था के रूप में इसका अनुग्रह या दया से कोई सम्बन्ध नहीं था बल्कि यह केवल न्याय की मांग करती है। इसके अलावा यह व्यवस्था धर्मी और सच्ची थी। व्यवस्था की धार्मिकता इसकी चौंधियाने वाली चमक थी।

कई साल पहले जब मैं स्विट्ज़रलैंड की राजधानी ज़्यूरिक में काम करता था, मैं एक सर्विस सहकर्मी के साथ किसी प्रार्थना सभा में जा रहा था। मैं एक गली में मुड़ गया जिसमें

पहले मैं कई बार गया हुआ था और, मैंने नज़र घुमाई तो अपने पीछे आती चकाचौंध करने वाली लाइटों वाली पुलिस की एक नीली कार देखी। मैं एक दम सड़क की साइड में होकर रुक गया, क्योंकि मुझे कोई पता नहीं था कि मुझसे क्या गलती हुई है। जल्द ही मुझे पता चल जाना था। बिना मेरी जानकारी के इस गली के प्रवेश द्वार पर "डू नॉट एंटर" का एक बोर्ड अभी लगा था। यह मेरे नगर में आखरी दिन ऐसा हुआ, क्योंकि मुझे अगले दिन अमेरिका वापिस जाना था। फिर नगर के सब कार्यालय आधे घण्टे में ही बंद होने वाले थे। अधिकारी की मिन्नत करते हुए मैंने कुछ इस प्रकार कहा: "देखो साहब, मैं कई साल से ज़्यूरिक में रह रहा हूं और मेरा कभी कानून तोड़ने पर चालान नहीं कटा है।" मुस्कुराते और अपना पैन उस छोटी पुस्तिका पर रखते हुए अधिकारी ने उत्तर दिया, "आप क्या चाहते हैं? आपको लगता है कि आपको मैडल मिलना चाहिए?" बेशक मैं जो चाहता था वह न्याय नहीं बल्कि दया था। मेरी नज़र सड़क पर नये-नये लगे रोड साइन पर नहीं पड़ी थी जिस कारण गलती चूक थी। परन्तु यह आदमी जज नहीं था बल्कि वह कानून का एक अधिकारी था। मैं चालान लेकर उपयुक्त कार्यालय में गया और परमेश्वर के अनुग्रह से कार्यालय बंद होने से पहले पहले चालान भुगत दिया। मुझे व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाया गया, कानून माना जाने के लिए है और यदि इसे नहीं माना जाता तो परिणाम भुगतने पड़ते हैं।

यह कहानी तो केवल छोटी सी बात थी पर परमेश्वर का कानून मज़ाक की बात नहीं है। जैसा कि पौलुस ने संक्षेप में लिखा है, "पाप की मजदूरी मृत्यु है। ..." इस नियम में सिवाय उसके जिसके साथ यह आयत खत्म होती है न तो दोबारा करने और न ही इसमें सुधार करने की छूट है, "परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:23)। उसी प्रकार से व्यवस्था ने कोई समाधान नहीं दिया। कानून के रूप में कानून न्याय की मांग करता है; यदि न्याय हो जाता तो मनुष्यजाति को पूरी की पूरी सजा मिलनी तय थी। परमेश्वर के अनुग्रह से इसे रोक दिया गया। पौलुस ने कहा:

> परन्तु अब व्यवस्था [या "कानून"] से अलग परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, ... अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है। ... परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं (रोमियों 3:21-24)।

हमारे धर्मी परमेश्वर के लिए अधर्मियों को धर्मी ठहराने के बावजूद अपने आपको धर्मी ठहराना कैसे सम्भव हुआ? समाधान संसार के आरम्भ से पहले परमेश्वर द्वारा सोचे गए छुटकारे के काम में मिलना था। "छुटकारा" चुकाए जाने वाले कर्ज की अदायगी को दिखाता है; और यीशु के बलिदान में परमेश्वर ने यह कर्ज चुका दिया। इस प्रकार से, "उसकी धार्मिकता प्रगट हो कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो" (रोमियों 3:26)। उसने व्यवस्था की शर्त यानी विधि (*dikaiōma*, डिकेयोमा) को पूरा किया, इसलिए पूरे अनुग्रह में वह पापी विश्वासियों को मसीह में अपने स्वयं के न्याय के नियम पर किसी भी प्रकार से बिना किसी बाधा के अनंत छुटकारे का महिमामय दान देने को मुक्त था।

परमेश्वर अपने सब कामों में बड़ा है। बहुत से लोग इस बात को देखते हैं कि वह एक

प्रेमी और दयालु परमेश्वर है, परन्तु वह न्यायी और धर्मी भी है। उसके ईश्वरीय स्वभाव का एक भी गुण किसी भी दूसरे गुण का उल्लंघन नहीं कर सकता। वे सब आपस में मिलकर रहते हैं। अपनी असीम बुद्धि में परमेश्वर ने मनुष्य के पाप की विनाशकारी समस्या के अपने समाधान को अपने निर्विवाद प्रेम और अपने पक्के न्याय दोनों को साथ-साथ प्रकट करते हुए एक मात्र सम्भव मार्ग का विचार दिया।

इस प्रकार से व्यवस्था को पूरा किया गया परन्तु क्या इससे मनुष्य के पाप की समस्या सचमुच में सुलझ गई? क्या हम ने मसीही बनने पर पाप करना बंद कर दिया? यूहन्ना ने साफ़ कहा: "यदि हम कहें, कि हममें कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं और हम में सत्य नहीं" (1 यूहन्ना 1:8)। परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध पहले से हमारे पाप को मान लेता है। यूहन्ना ने कहा, "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (1 यूहन्ना 1:9)। फिर उसने आगे कहा, "यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हम में नहीं है" (1 यूहन्ना 1:10)। हमने परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध का आरम्भ ही पापियों के रूप में नहीं किया बल्कि प्रभु के लहू से शुद्ध किए जाने के बाद भी हम पापी ही रहते हैं। इसलिए जो असल में हम हैं, उसे मानने की आवश्यकता रहती ही है और जो परमेश्वर हमें मानता है उसके द्वारा क्षमा के अनुग्रह की तलाश रहती ही है।

जो समाधान परमेश्वर ने शुरू किया था वह क्रूसारोहण का छुटकारा दिलाने वाला कार्य था। इससे व्यवस्था की आज्ञा पूरी हो गई और विश्वासियों पर परमेश्वर का नाना प्रकार का अनुग्रह किया गया। यह सब परमेश्वर का काम था और है। तो फिर इस प्रक्रिया में मनुष्य का योगदान क्या है जिसके द्वारा वह धर्मी ठहर सके?

सीधा सा उत्तर यह है कि जो हम असल में हैं उसकी दुखद हकीकत को मानकर उद्धारकर्त्ता के निरंतर प्रेम में भरोसा रखना आवश्यक था। "अबदी चट्टान" के पुराने भजन के शब्दों में हमें यह बड़ी सच्चाई मिलती है जिसे हमें याद रखना आवश्यक है:

मेरे हाथ की मेहनत सब,
बिल्कुल है बेकार ऐ रब्ब
आंसू बहते रहें गर,
दिल का जोश हो पुर असर
पाप का होगा न इलाज।
तू ही मुझे दे नजात

खाली हाथ मैं आता हूं,
क्रूस तले मैं जाता हूं
नंगे को पहिना लिबास,
लाचार पर कर, फ़ज़ल खास
चश्मे पास मैं दौड़ता हूं,
धोता है सिर्फ़ तेरा लहू।[63]

हमें इसे मानना चाहे जितना ना पसंद हो, और हमें अपने पापों को मानना जितना ना पसंद हो पर परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध की बुनियादी सच्चाई यह है कि वह पवित्र है और हम पापी। केवल उसके अनुग्रह से ही हम उसके साथ सही सम्बन्ध में डूब सकते हैं (3:26-29)। इस तथ्य से हमें हर रोज क्रूस के कदमों में झुकने को मजबूर हो जाना चाहिए।

हमारे लिए उस धार्मिकता को कमा पाना असम्भव है जिसकी व्यवस्था मांग करती है, हम उसके लिए उसे व्यवस्था कहें या कानून। जो कुछ हमें अपने दम पर नहीं पा सकते थे परमेश्वर ने हमारे लिए कर दिया जब उसने पाप बलि के रूप में अपने पुत्र को दे दिया। "परमेश्वर ने ... शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। इसलिये कि व्यवस्था की विधि [*dikaiōma*, डिकेयोमा] हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए" (रोमियों 8:3, 4)। इसलिए छुड़ाए हुए मनुष्य के लिए आत्मा के अनुसार चलना आवश्यक है।

विश्वास के द्वारा धार्मिकता (3:11)

अब्राहम को दी गई धार्मिकता विश्वास के द्वारा धार्मिकता थी (उत्पत्ति 15:5, 6)। परमेश्वर ने कभी दूसरा तरीका अपनाया ही नहीं! सब धर्मी लोग जो चाहे पुरानी वाचा के अधीन रहे या उसके पहले, वे पुरुष हों या स्त्रियां सब विश्वास के द्वारा जीवित रहे (इब्रानियों 11)। परमेश्वर के साथ मनुष्य के सही सम्बन्ध की बुनियाद हमेशा से ईश्वरीय प्रतिज्ञाओं में भरोसा रही है, फिर वह चाहे हाबिल का समय हो या नूह का (इब्रानियों 11:4, 7, 39, 40)। गलातियों 3 में, पौलुस अब्राहम के उदाहरण और आने वाले छुटकारा दिलाने वाले के सम्बन्ध में उसे दी गई प्रतिज्ञा पर ध्यान केन्द्रित कर रहा था। बेशक यह छुड़ाने वाला, प्रतिज्ञा किया हुआ "वंश" मसीह था (3:16)। परमेश्वर द्वारा मनुष्य को स्वीकार किए जाने की बुनियादी शर्त, जो पवित्र शास्त्र में कई जगह बताई गई है, शायद हबक्कूक 2:4 से बढ़कर स्पष्ट और कहीं नहीं दोहराई गई, जिसे गलातियों 3:11 में दोहराया गया है: "धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा" (देखें रोमियों 1:17; इब्रानियों 10:38)।

वायदे का पक्का परमेश्वर (3:15-18)

परमेश्वर वायदे का पक्का परमेश्वर है। पुराने नियम में हम पढ़ते हैं कि उसने नूह, अब्राहम, मूसा, और दाऊद जैसे लोगों के साथ वाचाएं बांधी। वह हमेशा अपने वायदों का पक्का रहा है और नई वाचा में जिनके साथ उसने वायदे किए हैं उनके साथ भी वफ़ादार बना रहेगा। नये नियम के कई हवाले परमेश्वर की वफ़ादारी पर ज़ोर देते हैं। उदाहरण के लिए इब्रानियों के लेखक ने यह गवाही दी कि "परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है" (इब्रानियों 6:18)। इसी प्रकार से पौलुस ने लिखा कि "परमेश्वर जो झूठ बोल नहीं सकता" (तीतुस 1:2)। एक और जगह उसने कहा, "तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है और वह ऐसा ही करेगा" (1 थिस्सलुनिकियों 5:24)।

हम आज परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा कर सकते हैं और हमें अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करके उसका अक्स बनना चाहिए। भजन लिखने वाले ने पूछा, "हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा? जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठाना पड़े" (भजन 15:1, 4; NIV)।

व्यवस्था और अब्राहम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा (3:15-29)

3:15-29 में विचार की जटिल बात में पौलुस ने व्यवस्था और अब्राहम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बीच सम्बन्ध को विस्तार से समझाया। आइए इस वचन से मिले कुछ मुख्य विचारों पर विचार करते हैं।[64]

व्यवस्था प्रतिज्ञा को बदल नहीं पाई (3:15-18)। मूसा की व्यवस्था ने परमेश्वर की अब्राहम के साथ पहले से की गई प्रतिज्ञा को बदला नहीं। इस तथ्य के साथ कि परमेश्वर ने इसे शपथ खाकर बांधा था, प्रतिज्ञा की प्राथमिकता ने इसे अपरिवर्तनशील बना दिया। परमेश्वर की प्रतिज्ञा अब्राहम के "वंश" यीशु मसीह के द्वारा जातियों को आशीष देने की थी।

व्यवस्था प्रतिज्ञा से बढ़कर नहीं थी (3:19, 20)। ऐसा दो कारणों से था। (1) व्यवस्था अस्थाई थी (3:19क)। जब मसीह ने नई वाचा स्थापित कर दी तो व्यवस्था की कोई आवश्यकता नहीं रही। (2) व्यवस्था एक मध्यस्थ के द्वारा दी गई (3:19ख, 20)। अब्राहम को दी गई परमेश्वर की सीधी प्रतिज्ञा के विपरीत व्यवस्था इस्राएलियों को स्वर्गदूतों और एक मध्यस्थ (मूसा) के द्वारा दी गई थी। इस कारण व्यवस्था अब्राहम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा से कम थी।

व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञा के विरुद्ध नहीं थी (3:21-25)। मूसा की व्यवस्था अब्राहम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा की विरोधी नहीं थी। इसका उद्देश्य जीवन देना नहीं बल्कि "पाप को प्रकट करना" या "पाप को रोकना" था। इसने मसीह के आने का रास्ता तैयार करके अपने उद्देश्य को पूरा किया।

व्यवस्था वह प्राप्त नहीं कर सकी जो प्रतिज्ञा कर सकती है (3:26-29)। अब्राहम को परमेश्वर की प्रतिज्ञा मसीह के द्वारा जातियों को आशीष देने की थी। इस प्रतिज्ञा के पूरा होने में यीशु ने आकर अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के द्वारा प्रायश्चित के अपने काम को पूरा किया। विश्वास, मन फिराव और बपतिस्मे के द्वारा इस शुभ समाचार को ग्रहण करने वालों को परमेश्वर की भरपूर आशिषें मिलती हैं।

व्यवस्था के प्रति जोशपूर्ण समर्पण वाली पृष्ठभमि में से आने के कारण पौलुस इसके महत्व को खारिज नहीं कर सकता था। उसने माना कि व्यवस्था ने एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। फिर भी उसने ज़ोर दिया कि इसका उद्देश्य पूरा हो चुका था और व्यवस्था अब मसीही लोगों पर लागू नहीं थी।

मसीही लोगों को जो दिया गया है (3:26-29)

हम में से जिन लोगों ने आज्ञाकारी विश्वास और उसमें डुबकी के द्वारा यीशु के सुसमाचार को ग्रहण किया है उन्हें बहुतायत से आशीष मिली है।

हम "परमेश्वर की संतान" हैं (3:26)। हमें "लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं" (रोमियों 8:15ख)। मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध बहाल हो चुका है। पिता हमें अपनी संतान के रूप में स्वीकार करता है और प्रार्थना में मसीह के द्वारा हमारी उस तक पहुंच होती है।

हम ने "मसीह को पहन लिया" है (3:27)। पाप के दोष को पहनने के बजाय हम ने

मसीह के वस्त्रों को पहन लिया है। अपने सिद्ध होने और अपने बलिदान के कारण वह हमें हमारे स्वर्गीय पिता के सामने धर्मी बनाता है। प्रतिदिन और उसके जैसे बनकर हम उसके स्वभाव को पहनना जारी रखते हैं।

हम मसीह की देह में हैं (3:28)। इस विविध देह में यहूदी और अन्यजाति, धनवान और निर्धन, नर और नारी सब हैं। जो लोग "मसीह यीशु में एक" हैं वही मसीह की देह यानी उसकी कलीसिया हैं।

हम "प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस" हैं (3:29)। मसीह (अब्राहम का "वंश") में होने के द्वारा, हम "अब्राहम के वंश" बन गए हैं। हम बहुत पहले अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा के "वारिस" हैं। हमारी अंतिम मीरास इस संसार की नहीं है। बल्कि "एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिये जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है" (1 पतरस 1:4)।

टिप्पणियां

[1]रॉबर्ट एल. जॉनसन, *द लैटर ऑफ पॉल टू द गलेशियंस,* द लिविंग वर्ड कमेंटरी (ऑस्टिन, टेक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 74. [2]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* तीसरा संस्करण, संसो. व सम्पा. फ्रेडरिक विलियम डेंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 1101. [3]यह उन दो चेलों के लिए इस्तेमाल हुआ है जो पुनरुत्थान के बाद इम्माउस के मार्ग पर यीशु के साथ चले थे; इन लोगों में आत्मिक बोध की कमी थी (लूका 24:25)। [4]बाउर, 171. [5]बेन विद्रिंग्टन III, *ग्रेस इन गलेशिया: एक कमैंटरी ऑन सेंट पॉलज़ लैटर टू द गलेशियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1998), 202. [6]कैनथ एल. बोल्स, *गलेशियंस एंड इफिसियंस,* द कॉलेज प्रेस एनआईवी कमैंटरी (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रेस प्रकाशन कं., 1993), 71-72. [7]रिचर्ड एन. लौंगनेकर, *गलेशियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंटरी, अंक 41 (नैशविल: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1990), 100. [8]आत्मा के चमत्कारी दान कई बार बपतिस्मे के समय दिए जाते थे (प्रेरितों 19:5, 6), जो आत्मा का वास दिए जाने के समय भी होता है। अन्य समयों में, यह चमत्कारी दान बपतिस्मे के बाद दिए जाते थे (प्रेरितों 8:14-17)। दोनों परिस्थितियों में नये मसीहियों को प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा दान मिलते थे। कुरनेलियुस के मामले में आत्मा के बहाए जाने से यहूदी मसीहियों के लिए एक चिन्ह का काम किया कि अन्यजातियों भी सुसमाचार ग्रहण करने के योग्य थे (प्रेरितों 10:44-48)। [9]पवित्र आत्मा पुराने नियम के युग के दौरान सक्रिय तो था, पर चमत्कारी काम आम तौर पर इस्राएल के अगुओं तक सीमित होते थे (जैसे मूसा, शिमशोन और एलिय्याह)। योएल ने उस समय की भविष्यवाणी की थी जब आत्मा ने "सब प्राणियों पर" बहाया जाना था (योएल 2:28, 29; देखें प्रेरितों 2:17, 18)। [10]बाउर, 914-16.

[11]देखें गलातियों 4:11; 1 कुरिन्थियों 15:2; 2 कुरिन्थियों 6:1. [12]देखें 2 कुरिन्थियों 9:10; इफिसियों 4:16; फिलिप्पियों 1:19, कुलुस्सियों 2:19; 1 पतरस 4:11; 2 पतरस 1:5, 11. [13]बाउर, 1087. [14]यूनानी नये नियम में "नई नई" के लिए दो शब्दों का इस्तेमाल हुआ है: *neos* ("समय में नया," "हाल का") और *kainos* (केनोस, "गुण में नया" या "उपयोग में नया")। बाद वाला शब्द मरकुस 16:17 में मिलता है। यह स्पष्ट है कि पिन्तेकुस्त के दिन गलीली प्रेरितों इस्तेमाल की गई "भाषाएं" थी जो समय में नई नहीं थी बल्कि जातीय भाषाएं थीं, परन्तु निश्चय ही उनके द्वारा नई नई इस्तेमाल की गई थीं। इसी से पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में वहां इकट्ठा हुए अलग-अलग भाषाओं वाले इलाकों के लोगों को हैरानी हुई (प्रेरितों 2:7, 8)। [15]ये "भाषाएं" बिना सीखे, जातीय भाषाएं थीं (देखें प्रेरितों 2:5-11; 10:44-47; 11:15)। [16]"सब मनुष्यों" शब्दों के सम्बन्ध में अन्यजातियों पर एक दूसरा बहाया जाना आवश्यक था (नमूने के तौर पर), क्योंकि पिन्तेकुस्त के दिन वहां केवल यहूदी लोग ही थे। यह दूसरी बार बहाया जाने का एक कारण यहूदियों को यकीन दिलाना था कि अन्यजाति लोग परमेश्वर को स्वीकार्य थे (प्रेरितों 11:1-18)। [17]देखें यूहन्ना 2:18-21; 3:2; 7:31; 9:16; 12:37; 20:30, 31; 1 कुरिन्थियों 14:21, 22; 2 कुरिन्थियों 12:12; इब्रानियों 2:3, 4. [18]देखें रोमियों 4:1-25; इब्रानियों 11:8-12, 17-19; याकूब 2:18-24.

[19]एफ. एफ. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द गलेशियंस,* द न्यू इंटरनेशनल ग्रीक टेस्टामेंट कमैंटरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 155. [20]देखें प्रेरितों 11:18; रोमियों 3:24; 6:23.

[21]आर. ऐलन कॉल, *द अपिस्टल ऑफ पॉल टू द गलेशियंस,* द टिंडेल न्यू टेस्टटामेंट कमैंटरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, शिकागो: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1965), 92. [22]देखें रोमियों 2:28, 29; फिलिप्पियों 3:2, 3; कुलुस्सियों 2:11–13. [23]बोल्स, 76. [24]जॉनसन, 83. [25]देखें 2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 4:15; 5:8, 9; 1 पतरस 2:22; 1 यूहन्ना 3:5. [26]देखें 1 कुरिन्थियों 6:20; 7:23; 2 पतरस 2:1; प्रकाशितवाक्य 5:9; 14:3, 4. [27]लियोन मॉरिस, *गलेशियंस: पॉल'स चार्टर ऑफ क्रिश्चियन फ्रीडम* (डॉउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रेस, 1996), 106. [28]बाउर, 685. [29]लुडविंग कोहेलर एंड वाल्टर बाउमगार्टनर, *द हिब्रू एंड अमेरिकन लैक्सिकन ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट,* स्टडी एडि. अनु.व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:863. [30]क्रूस पर दिए जाने पर और जानकारी डेविड स्टीवर्ट, *ए कमैंटरी ऑन द फिलिपियंस* (सरसी, आरकैंसा: स्टीवर्ट पब्लिकेशंस, 2006), 279–83.

[31]लौंगनेकर, 128. [32]मॉरिस, 109. [33]बॉल्स, 82. [34]विलियम एम. रैमसे, *ए हिस्टोरिकल कमैंटरी आन सेंट पॉल'स एपिस्टल टू द गलेशियंस,* लिमिटिड क्लासिकल रीप्रिंट लाइब्रेरी (पृष्ठ नहीं: जी. पी. पुटनेमस संस, 1900; रीप्रिंट, मिनयापोलिस: क्लॉक एंड क्लॉक क्रिश्चियन पब्लिशर्स, 1978), 354–55. [35]देखें उत्पत्ति 12:7; 13:15, 16; 15:5, 18; 16:10; 17:7–10; 22:17, 18 (KJV)। [36]3:29 में पौलुस ने अब्राहम के आत्मिक "वंशों" की सामूहिक रूप में बात करने के लिए एकवचन संज्ञा शब्द *sperma* (स्पर्मा) का इस्तेमाल किया। यहूदी मत में *zera'* (ज़ेरा) शब्द का इस्तेमाल इसहाक के द्वारा अब्राहम के वंश के लिए सामूहिक रूप में इस्तेमाल किया जाता था, जिसमें इश्माएल और एसाव के वंशों को शामिल नहीं किया जाता था। [37]नूह (उत्पत्ति 9:8–17), अब्राहम और उसके परिवार (उत्पत्ति 15:18–21; 17:1–14), मूसा के द्वारा इस्राएल (निर्गमन 19:5, 6; 24:3–8; 34:10), और दाऊद और उसके घराने (2 शमूएल 7:12–16; 23:5) सहित परमेश्वर ने पुराने नियम में कई महत्वपूर्ण वाचांए बांधी। उसने अपने चुने हुए लोगों को यह भी प्रतिज्ञा दी कि वह उनके साथ एक नई वाचा बांधेगा (यिर्मयाह 31:31–34; देखें इब्रानियों 8:6–13)। [38]मॉरिस, 111. [39]वहीं। [40]ये यूनानी क्रिया शब्द अधिकार को दर्शाने वाले संज्ञा शब्द (*kurios*) संज्ञा से सम्बधित हैं। इसका अर्थ है "प्रभु," "स्वामी" या "शक्तिमान।"

[41]"मीरास" के लिए यूनानी शब्द (*klēronomia*) है। (4:7 पर टिप्पणी देखें।) [42]जॉनसन, 92. [43]यह विचार कि व्यवस्था अस्थायी थी पहली सदी के यहूदी के लिए अनोखी बात होगी। बेन विट्रिंगटन III ने तर्क दिया कि "आरम्भिक यहूदियों का मानना था कि व्यवस्था स्थायी थी, वास्तव में परमेश्वर के लोगों के जीवन के लिए सनातन मंशा और महत्व की थी" (विट्रिंगस्टन, 254)। इस अवधारणा की झलक *1 एनोचक* 99.2; *जुबलीस* 1.26–29; जोसेफस *अगेंस्ट एपियन* 2.39 में मिलता है। [44]डेविड जे. लल्ल, "'द लॉ वास अवर पैडागोग': ए स्टडी इन गलेशियंस 3:19–25," *जरनल ऑफ बिब्लिकल लिटरेचर* 105 (सितंबर 1986): 483. [45]*जुबलिसस* 1.26–29; जोसेफस *एंटीक्विटिज़* 15.5.3. [46]जे. बी. लाइटफुट, *द अपिस्टल ऑफ़ सेंट पॉल टू द गलेशियंस,* क्लासिक कमेंट्री लाइब्रेरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाऊस, 1957), 147. [47]बाउर, 1067. [48] यह सच है चाहे इससे संबंधित अंग्रेज़ी शब्द pedagogue (पेडागोग) "अध्यापक," "शिक्षक," या "अध्यापक" का संकेत देता है। [49]अतिरिक्त जानकारी के लिए, देखें लौंगनेकर, 146–48; नॉर्मन एच. यंग, "*पेडागोगोस*: द सोशल सेटिंग ऑफ ए पॉलिन मेटाफोर," *नोवम टेस्टमेंटम* 29, नम्बर 2 (1987): 150–76; नॉर्मन एच. यंग, "द फिगर ऑफ द *पेडागोगोस* इन आर्ट एंड लिटरेचर," *बिबलिकल आरक्योलोजी* 53, नं. 2 (जून 1990): 80–86. [50]हेरोदोटस *हिस्ट्रीज़* 8.75.

[51]लिबनिअस *ओरेशनस* 58.8. [52]अरिस्टाइउस *इन डिफेंस ऑफ़ ओरेटरी* 380. [53]ब्रूस, 182. [54]जीनोफोन *लैसेडेमैनियंस* 3.1 [55]*द इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., सम्पा. ज्यॉफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिल्ले (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979), 1:840 में रॉबर्ट गुएलिच, "कस्टोडियन।" [56]देखें निर्गमन 4:22, 23; व्यवस्थासार 14:1, 2; होशे 11:1. [57]*सामज़ ऑफ सौलोमन,* 17.26, 27; *जुबिलीज़* 1.22–25; *3 मक्काबियों* 6.28. [58]बोलस ने टिप्पणी की, "आत्मा के बपतिस्मे की प्राथमिकता पर ज़ोर देने और पानी के बपतिस्मे को कम बताने वालों को यह देखना चाहिए कि मनुष्यों को कहीं पर भी आत्मा के बपतिस्मे की आज्ञा नहीं दी गई है, और यदि दी गई होती तो इसे माना नहीं जा सकता था। पानी का बपतिस्मा

विश्वासियों से आम तौर पर मांगा जाता है और आरम्भिक मसीहियों में लिया जाना आम था'' (बोल्स, 95)। [59]लौंगनेकर, 156. [60]देखें 1 कुरिन्थियों 7:22; 12:13; इफिसियों 2:14, 15; कुलुस्सियों 3:11; फिलेमोन 16.

[61]देखें 1 कुरिन्थियों 11:3-16; 14: 34-36; इफिसियों 5:22-33; कुलुस्सियों 3:18, 19; 1 तीमुथियुस 2:8-15; 3:2, 8, 12; तीतुस 2:3-5। (देखें जैक कॉट्रेल, *जेंडर रॉलस एंड द बाइबल: क्रियशन, द फॉल एंड रिडेम्प्शन* [जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 1994], 217-94.) [62]एफ. लेगर्ड स्मिथ, *मैन ऑफ स्ट्रेंथ फॉर विमन ऑफ गॉड* (यूजीन, ओरिगोन: हार्वेस्ट हाउस पब्लिशर्स, 1989), 203. [63]ए. एम. टॉपलेडी, ''रॉक ऑफ एजस,'' *सॉग्स ऑफ फेथ एंड प्रेज़,* संस्क. और सम्पा. एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994) का हिन्दी अनुवाद। [64]ये मुख्य प्वायंट वॉरेन डब्ल्यू वियर्स्बे, *बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री: न्यू टेस्टामेंट,* अकं. 1 (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: विक्टर, 2001), 701-4 से लिए गए।